वेदों की ओर लौटो...!

॥ ओ३म् ॥

॥ कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ॥

वेद प्रतिपादित मानवीय मूल्यों को
जन-जन तक पहुँचाने हेतु कार्यतत्पर
सशक्त एवं समर्थ प्रान्तीय आर्य संगठन

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का
मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द

वर्ष १६ अंक १ जनवरी २०१६

संसार नमन करता है जिसको ऐसा कर्मठ युग-चेता था ।
अपना सुभाष जग का सुभाष भारत का सच्चा नेता था ।।
जयन्ती दिवस (२३ जनवरी) पर विनम्र अभिवादन !

पुरस्कार, गौरव व अभिनन्दन

अजमेर के ऋषिमेले पर सम्पादक डॉ.नयनकुमार आचार्य को परोपकारिणी सभा द्वारा **उत्कृष्ट आर्य कार्यकर्त्ता** पुरस्कार प्रदान करते हुए आचार्य सत्यानन्दजी वेदवागीश, डॉ. सूर्यादेवी चर्तुवेदा, आचार्य सोमदेवजी ।

प्रान्तीय सभा के उपमंत्री प्राचार्य श्री देवदत्तजी तुंगार के अमृतमहोत्सव पर तुंगार दम्पती का गौरव करते हुए पूर्व सांसद डॉ. व्यंकटेशजी काब्दे ।

आदर्श माता-पिता दोडीयाजी के ८६ वें जन्मदिवस पर आर्य समाज परली में आयोजित समारोह में अभिनन्दन करते हुए पं.सन्दीपजी वैदिक, बालाप्रसादजी सोनी व दोडिया परिवार ।

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का
मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

सृष्टि सम्वत् १,९६,०८,५३,११६ कलि संवत् ५११६ विक्रम संवत् २०७२
दयानन्दाब्द १९१ पौष जनवरी २०१६

प्रधान सम्पादक
माधव के. देशपांडे
(९८२२२९५५४५)

मार्गदर्शक सम्पादक
डॉ.ब्रह्ममुनि
(९४२१९५१९०४)

सम्पादक
डॉ.नयनकुमार आचार्य
(९४२०३३०१७८)

सहसम्पादक - प्रो.देवदत्त तुंगार, प्रो.ओमप्रकाश होलीकर
प्रा. सत्यकाम पाठक, ज्ञानकुमार आर्य

अनुक्रम

हिन्दी विभाग

१) आत्महत्या - एक अपराध (सम्पादकीय).....४
२) अग्निहोत्रीय चिकित्सा का महत्व व लाभ ६
३) ऋषिमेले की भव्यता.....११
४) आर्यविभूतियों का गौरव.....१५
५) समाचार दर्पण.....१७

मराठी विभाग

१) सुभाषित संदेश/दयानंदांची अमृतवाणी.....२१
२) वेदांमध्ये गोहत्या, गोमांस भक्षण नाही.....२२
३) प्रेरक आर्य व्यक्तिमत्व - स्व. गुट्टे.....२४
४) वार्ता विशेष.....२९
५) मानवतेची प्रार्थना.....३२
६) सभा उपक्रम.....३३
७) सूचना.....३४

● प्रकाशक ●
मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
सम्पर्क कार्यालय-आर्य समाज
परली-वैजनाथ ४३१५१५

● मुद्रक ●
वैदिक प्रिन्टर्स
महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा
आर्य समाज,परली-वै.

-वैदिक गर्जना के शुल्क-
वार्षिक - रु. १००/-
आजीवन रु. १०००/-

इस मासिक पत्रिका में प्रकाशित लेखों तथा विचारों से सम्पादक मण्डल सहमत हो, यह अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र परली-वैजनाथ जि.बीड ही होगा।

सम्पादकीयम्

आत्महत्या -एक अपराध .....

विश्व का बदलता परिवेश मानव को बाह्यरूप से जहां अत्यधिक चमकीला व भडकीला बना रहा है, वहीं उसे आन्तरिक दृष्टि से बहुतही खोकला कर रहा है। भौतिक सुख-सुविधाओं में लिपटा आज का आदमी धन, सदन व वाहन से भले ही प्रगति के शिखर पर विराजमान हो, किन्तु मानसिक व आत्मिक दृष्टि से वह अधोगति की खाई गिरता नजर आ रहा है। अपनी धैर्यशक्ति व संयमशीलता को खोनेवाला मानव सम्प्रति इतना भी विचार नहीं कर रहा के उसे सचमुच करना क्या है ? झट से मन में आया, वह बिना सोचे कर लिया। परिणामों का विचार न करते हुए अपने ही हाथों से नानाविध संकटों की आमन्त्रित करनेवाले विवेकहीन लोगों की संख्या आज कुछ कम नहीं है।

बढती आत्महत्याएं देश के लिए महती चिन्ता का विषय हो चुकी है। इन घटनाओं से पता चलता है कि अब मरना कितना सस्ता हो गया है। पहले सामान्यतः ससुरालवालों की यातनाओं से तंग आ चुकी बहुओं द्वारा खुदकुशी कर लेने की घटनाएं होती जाती थी, किन्तु आज तो केवल महिलाएं ही नहीं बल्कि बच्चे, युवक, प्रौढ, बूढे आदि सभी आत्महत्याएं कर रहे हैं। छात्रों में भी इसके प्रमाण जादा बढ रहे हैं। देश के कईं प्रान्तों में किसानों व मजदूरों द्वारा की गयी सर्वाधिक आत्महत्याएं सरकार के लिए ही, बल्कि समाज के लिए भी एक समस्या बन गयी हैं। विशेषकर महाराष्ट्र में गत ५-६ वर्षो से लगातार किसान व मजदूर आत्महर्त्या कर रहे हैं। ऐसा कोई दिन नहीं जाता, जिस दिन भूमिपुत्रों ने खुद को समाप्त न किया हो ? यह सही कि हवामान परिवर्तन के कारण समय पर वर्षा नहीं हो रही है। पर्याप्त वर्षा न होने से खेती करना कठिन हो चुका है। कर्जबाजारी बना किसान इस महंगाई के जमाने में दब चुका है। यह स्थिति गत कईं वर्षों से जारी है। बोया हुआ कुछ धान अच्छी तरह उग भी गया, तब भी मौसम में अचानक आये बदलाव के कारण आकस्मिक वर्षा व ओले गिरने से किया कराया सारा चौपट हो जाता हैं। ऐसी निराशाजनक स्थिति में किसान आत्मविश्वास खो रहा है और वह जीना ही नही चाहता।

अतिवृष्टि व अनावृष्टि के कारण पहले भी अकाल पडता था, तब किसान बडे धैर्य के साथ जीता था। अपनी आवश्यकताओं को सीमित रखते हुए असंग्रह की वृत्तिसे जीता था। मेहनत द्वारा खेती में जो भी धान्य मिलता, उसी

से गुजारा करते हुए संतुष्ट रहता था । आज का किसान हो या मजदूर अपनी आवश्यकताओं को व्यर्थ ही बढा रहा है । शहरों जैसी आरामतलब व सुविधाभोगी जीवन बीताने की वृत्ति ने उसे कंगाल बना दिया है। यदि कम खर्चे में जीवनयापन करते हुए संतोषपूर्वक रहता तो आत्महत्या करने की नौबत ही नहीं आती ?

प्रश्न यह उठता है कि क्या आत्महत्या करने से सारी समस्याएं मिट सकती है ? चाहे किसान हो या अन्य कोई स्वयं को समाप्त करना यह कौनसी बुद्धिमता है ? ईश्वर ने हमें यह अमूल्य नरतन प्रदान दिया है । इहलोक की यात्रा को सफल कराने का यह सर्वोत्तम साधन है । इस तरह अपने शरीर की दुर्गति करना, यह तो इस शरीर का अपमान है। फिरभी आत्महत्या करना कोई उपाय नहीं है । इसका समाधान तो हमें अपने ही अन्दर ढूंढना होगा । आत्महत्या करनेवालो का जीवन के प्रति दृष्टिकोन प्रायः विशाल नहीं होता । अपने अनुकूल कोई बात न होती देख वे निराश हो जाते हैं और खुद को खतम करने की मानसिकता बना लेते हैं । बिना कष्ट किये अधिकाधिक लाभ मिले, उनकी यह एक धारणा भी हानियों से बचना चाहती है। यह मानसिकता ही मानव के लिए खतरा बन जाती है । वस्तुतः अनुकूलता व प्रतिकूलता इन दोनों बातों पर समान दृष्टि होनी चाहिए । आत्महत्या करने से मूलभूत समस्या समाप्त नहीं होती, बल्कि वह तो और भी अधिक बढ जाती है । खुदकुशी करने से हम अपने परिवार व सम्बधियों के लिए भी विपदा खडी करते हैं । आत्मघाती लोग यह नही समझते कि मरते ही मैं समस्याओं से मुक्त हो जाऊंगा ? उनकी यह नासझी अगले जन्म के बन्धन का कारण बनती है । वेद आत्मघातियों की कडी निंदा करता है। उनके लिए **अन्धेन तमसावृत्ताः** कहकर मृत्यु के बाद उनका स्थान **असुर्यलोक** बताया है । आत्महत्या करने वाले लोगोंकी आत्मज्योति बुझ गई होती है । इसी कारण वे ऐसे घृणास्पद कृत्य करने के लिए तत्पर होते हैं । इन आत्मविनाश करनेवाले लोगों को रोकने के लिए वैचारिक प्रबोधन की आवश्यकता है । केवल आर्थिक सहाय्यता पूरी तरह से समस्या का समाधान नहीं हो पाता। आत्मघात के निराशपूर्ण वातावरण से बाहर निकालने हेतु वैदिक तत्वज्ञान, संस्कार तथा आध्यात्मिक विचारोंका प्रचार जरूरी है । वेद ने आत्मशक्ति को बढाने की प्रेरणा दी है । इस प्रेरक वाणी को जीवन से निराश हो चुके उन मित्रों तक पहुचाना केवल आर्यों का ही परमधर्म है । **उत्क्रामातः पुरुष मावपत्था ।**

– डॉ. नयनकुमार आचार्य

अग्निहोत्रीय चिकित्सा का महत्व व लाभ

-डॉ. प्रद्युम्नकुमार शास्त्री

प्रकृति के अनुकूल जीवनयापन करने से मनुष्य सदा रोगों से मुक्त रहता है । फिर भी यदि किसी कारणवश कोई अस्वस्थ हो जाये, तो प्राचीन परम्परा से प्रचलित अग्निहोत्रीय चिकित्सा के द्वारा स्वच्छ जल, वायु का सेवन कर पुनः स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर सकते हैं, क्योंकि वनस्पतियाँ ही मनुष्यों की आहार हैं । उसी से शरीर बनता और बढता है । इन वनस्पतियों के न्यूनाधिक अंश शरीर में पडने से कईं प्रकार के रोग उत्पन्न होते हैं । उन रोगों के शमन के साथ आरोग्यता की प्राप्ति भी विशेष गुणवाली वनस्पतियाँ ही कराती हैं तथा खोये हुए स्वास्थ्य को फिर से लौटा देती है । ऐसे वनस्पतियों का पंचमहाभूतों के आधार पर आयुर्वेद में वर्णन किया है, जिनका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है ।

१) आकाशतत्व की जडीबूटियाँ -

तृण=घासफूंस वनस्पतियों को आयुर्वेदाचार्यों ने आकाश तत्व की वनस्पति माना है । इनमें सहनशीलता अधिक होती है । आकार में छोटी होने पर भी ये प्रतिकूलता को खूब सहन करती है । दुर्वा = दूब इसका प्रमुख उदाहरण है । वेदों में दुर्वा की समृद्धि की कामना इस प्रकार की गई है - **काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ति परूषः परूषस्परि एवा नो दूर्वे प्रतरन्तु सहस्त्रेण शतेन च ।।**

गेहूँ, जौ, नागरमोथा, बांस आदि को आकाश तत्व की जडी बुटियों के अन्तर्गत परिगणित किया जाता है । ये हानिरहित द्रव्य हैं तथा शरीर की जीवनीशक्ति का विशेष रूप से संवर्धन करते हैं । इनके सेवन से व्यक्ति में धैर्य तथा उत्साह की वृद्धि होती है और मनोबल बढता है ।

२) वायुतत्व की जडीबूटियाँ-

इनमें पत्तों की अधिकता होती है, वे प्रायः वायु तत्व की होती हैं, क्योंकि उनमें श्वसनक्रिया अधिक मात्रा में होता रहता है ।

३) अग्नितत्व की जडीबूटियाँ-

इन वनस्पतियों में तृप्तिकारक गुण होते हैं अतः ये पोषण के कार्य करते हैं । इनके पास दूसरों के पोषण हेतु पर्याप्त रस रहता है । जैसे - आम, आंवला, कटहल, हरड, सेव आदि में आहार तत्व पर्याप्त होता है । इसलिए ये औषधि और आहार दोनों कार्यों में प्रयोग होते हैं ।

४) जलतत्व की जडीबूटियाँ -

जिन वनस्पतियों में हर परिस्थिति

में बारह महिने अंकुर फूटते हो तथा नये पत्ते आकार पुष्पित होते रहते हों, ऐसी सदाबहार वनस्पतियाँ जल तत्व वाली होती हैं । इनमें से कुछ वनस्पतियों में अंकुर तथा पुष्प नहीं होते । वे अपने जडों से खाद्य पदार्थ संचित कर अपना पोषण एवं वंशवृद्धि किया करते हैं । इनकी शाखाओं में कलमें लगाई जाती हैं । इनके जड या कन्द आदि में नये अंकुर तथा जडें फूटती हैं और नये पौधे उत्पन्न होते हैं । प्रायः विरूध और लताएं इसी वर्ग में आते हैं । ये सजीव एवं हरिभरी दिखाई देती हैं । उदाहरणस्वरूप - मुलैठी, शतवारी, अक्तमुलं, अडूलसा, गिलोय आदि प्रमुख है ।

५) पृथ्वीतत्व की जडीबूटियाँ -

ये अत्यन्त दृढ तथा काष्ठप्रधान होती हैं । इनकी वृद्धि धीरे-धीरे होती है और ये बहुत वर्षों तक जीवित रहती हैं । इनके पत्ते छोटे व पतले हुआ करते हैं, इनके बीज का आवरण कठोर होता है । इनमें फल बहुत कम आते हैं । ये अपनी जडों से उतना ही आहार ग्रहण करती हैं, जितना इन्हें जरूरी होता है । शोषित खाद्य पदार्थ से शर्करा निर्माण का कार्य पत्तों को बहुत कम करना पडता है । इस कारण इसके पत्ते आकार में लघु तथा तनें पतले होते हैं । दूसरा कारण यह भी हैं कि ये वृक्ष पृथ्वी से बहुत अल्पमात्रा में जल का शोषण करते हैं । इसलिये जल को बाहर उत्सर्जित करने के लिए बडे-बडे पत्तों की आवश्यकता ही नहीं होती । ये तेज धूप और गर्मी में भी हरे-भरे बने रहते हैं । इनकी वृद्धि शनैः शनैः होने से जब तक ये लघुकाय होते हैं, तब तक पशु आदि से रक्षा के इनमें काटों की अधिकता रहती हैं । बडीं आयु में इनके कांटे कम होते चले जाते हैं । इनमें पृथ्वी तत्व की अधिकता होने से इनकी लकडी बहुत ही मजबुत होती है । नीम, शीशम, साल, साकू, बबूल, तथा शमी वृक्ष प्रमुख हैं, ये उंची और पथरीली जमीनपर भी उगती हैं ।

इस प्रकार पाँच महाभूतों के गुणों से युक्त वनस्पतियों को आवश्यकतानुसार यज्ञाग्नि में होम करने से वही लाभ मिलता है, जो उनसे बनी हुई औषधियों से मिलती है । विपत्तियाँ मात्र शारीरिक रोग के रूप में ही नहीं आती, बल्कि उनकी आधिभौतिक, आधिदैविक और आध्यात्मिक दुःख ये तीन प्रकार के हैं, जो कभी भी जीवन पर घट सकते हैं । प्रारब्धजन्य दुष्कर्मों के फलस्वरूप न केवल रोग अपितु अन्य प्रकार के संकट भी जीवन में आते हैं । उन संकटों के निवारण में यज्ञविधि जितनी लाभदायक सिद्ध होती है, उतनी और कोई नहीं, क्योंकि किसी भी स्थूल वस्तु की अपेक्षा

उसके सूक्ष्मरूप का प्रभाव सैकडों गुणा बढ जाता है । इंजेक्शन औषधि का सूक्ष्म हैं, यहीं कारण है कि पुराने और असाध्य रोगों में डॉक्टर अधिकतर इंजेक्शनों की व्यवस्था करवाते हैं । इंजेक्शन स्थूल औषधि की अपेक्षा रोगी को शीघ्रता से स्वस्थ करता है । इसके ठीक विपरीत आयुर्वेदिक चिकित्सा करनेवाले वैद्य लोग औषधि शक्ति को बढाने के लिए उसे महिनेभर खदल में घुटवाते हैं अथवा उसको भस्म के रूप में परिवर्तित करवाते हैं । आयुर्वेद में इसी उद्देश्य रूप से औषधियों को कण्डे की आग में भूमिगत कर भस्म बनाने का संकेत है ।

कोई भी औषधि को खदल में क्यों न घोटीं जाय व कितनी ही क्यों न उबाली जाये, उसके परमाणु उतने सूक्ष्म नहीं हो सकते, जितने कि हवन द्वारा अग्नि में जलाने से ! विज्ञान का सिद्धान्त हैं की Matter is industrutible ! पदार्थ अविश्वर अर्थात् कोई भी वस्तु पूर्ण से रूप से नष्ट नहीं होती, बल्कि उसका रूप बदलता रहता है । यथा - लकडी को जलानेपर कच्छा कोयला बनता हैं और कोयले पर जलाने पर राख बन जाता है । फिर भी उस लकडी का जो गुण था, वह सूक्ष्म होकर वायु में मिल गया । ठीक इसी प्रकार घी को जलाने पर उसका अस्तित्व समाप्त नहीं होता, बल्कि वह गैस के रूप में परिवर्तित होकर वायुमण्डल में फैल जाता है । विज्ञान ने यह भी प्रमाणित किया है कि स्थूल पदार्थ के परमाणु जब सूक्ष्म रूप धारण करते हैं, उनके भीतर निहित शक्ति प्रखर होती है । यह कार्य अग्निहोत्र के बिना सम्भव नहीं है । यज्ञाग्निद्वारा सूक्ष्म परमाणुओ के में विभक्त हो जाने से औषधि के गुण और परिणाम दोनों में वृद्धि होती है । जिस प्रकार एक सूखी लाल मिर्च को आग में डालने से सैकडों लोग प्रभावित होते हैं, ठीक उसी प्रकार जडी - बूटियों के द्वारा निर्मित हवन सामग्री को यज्ञाग्नि में जलाये जाने से औषधि के सूक्ष्म कीटाणुओं पर परमाण्ड व केवल रोगों के सूक्ष्म को ही नष्ट कर सकते हैं, बल्कि वे हर उस स्थान में पहुंचकर अपना प्रभाव डालते हैं, जहां पर शरीर के गुप्त से गुप्त भागों में अपना स्थान बनाकर मनुष्य को रोग से पीडित रखते हैं । रोगों के कृमि कितने ही सूक्ष्म क्यों न हों पर वे वायु से सूक्ष्म नहीं हो सकते । शरीर के जिस भीतरी भाग में रोग के कीटाणु पहुंच सकते हैं, वहाँ यज्ञाग्नि द्वारा निर्मित वायु तो बिना किसी बाधा के आ जा सकती है । हवन की हुई औषधियों के सूक्ष्म तत्व उसी प्रकार सूक्ष्म होकर वायु में मिलकर श्वास द्वारा शरीर में पहुंचकर रोगों का नाश करते हैं । इसलिए किसी ने कहा कि यज्ञ करना एक बडी अस्पताल खोलने समान हैं ।

जिससे अगणित रोग से पीडित तथा भविष्य में बिमार पडनेवाले लोगों का घर पर बैठे ही ईलाज हो जाता है । चिकित्सापर जो धन, समय, श्रम, चिन्ता, आदि कार्यों में जो कठिनाई हो सकती हैं, उससे बच सकते हैं ।

जब हम यज्ञाग्नि में घृत, अन्न, औषधि आदि की आहुति देते है, तब उनके रोग निवारक गुण वायुमण्डल में फैल जाते हैं और उस वायु को हम लम्बी गहरी श्वास के द्वारा फेफडों में भरते है, तब उस वायु का रक्त कण के साथ सीधा सम्पर्क हो जाता है । यह वायु अपने विद्यमान रोगनिवारण परमाणुओं को रक्त में पहुंचा देता है, जिसके प्रभाव में रक्त में जो कृमि होते हैं वे वापस होनेवाले प्रश्वास के द्वारा दूषित रक्त कण के साथ बाहर निकल जाते है और शरीर को किसी प्रकार का नुकसान नहीं होता । प्रायः जीर्ण रोगों से ग्रस्त व्यक्ति जल्दी ठीक नही हो पाता है । ऐसे व्यक्ति अनेक प्रकार के उपचार कराने के बाद जब डॉक्टर लोग जवाब देते है, तब रोगी जीवन से निराश हो जाता है । पुराने रोगों का ठीक न होने का एक कारण यह भी है कि रोग के सूक्ष्म कीटाणू शरीर के किसी अंग की भीतरी परत में परत में स्थायी रूप से बस जाते हैं और शरीरि को धीरे - धीरे रोगों से ग्रसित करते जाते हैं तथा शरीर के उन भीतरी भागों में रक्त के सूक्ष्म कण बडी कठिनता से पहुंच पाते हैं, किन्तु रोगी को दवा दी जाती है । स्थूल रूप से जिसके परिणाम स्वरूप रोगी दवा खाता -पीता रहता है, फिर भी कोई लाभ कभी नही मिल पाता । वैदिक साहित्य में इन्हीं विषैले कीटाणुओं को राक्षस नाम से सम्बोधित किया गया है । स्वस्थ जीवाणुओं पर आकमण करके उन्हें परास्त करना और शरीर के रस, रक्त मांससहित उन्हें भी खा जाना यहीं इनका काम है । ठीक इसी प्रकार जो मनुष्य अपनी जिह्वा के लालच में दूसरे जीव जन्तुओं के जीवन नष्ट कर उसे खा जाता है, वह भी राक्षस है । अतः स्वस्थ रक्त कणों को भी इस आक्रमण से सतर्क रहना पडता है और अवसर देखकर उनके साथ डट के लोहा लेना पडता है । इसलिए प्राचीन वैदिक परम्परा के अनुसार स्वस्थ कणों को जहसीले कीटाणुओं से विजय प्राप्त करवाने के लिए अग्निहोत्रीय चिकित्सा अपनानी चाहिए ।

क्योंकि प्रकृति की उन्मुक्त वायु में दिशाओं की गति के अनुसार वायु के गुणों में भी विभिन्नताएं पायी जाती हैं । जैसे- पूर्व से आनेवाली सूक्ष्म वायु जहाँ क्षतघाव को सुखाती है, वहीं पश्चिमी वायु उसे हराकर कर देती है और बरसाती हवा तो हर प्रकार के घाव के लिए हानिकारक मानी जाती है । इसी विषमता के कारण प्रकृति की बरसाती हवा तो हर प्रकार के

घाव के लिए हानिकारक मानी जाती है। इसी विषमता के कारण प्रकृति की ओषजन युक्त वायु प्रत्येक समय एक समान लाभकारी नहीं हो सकती। इनसे लाभ प्राप्त करने के लिए इसकी गति तथा ऋतुओं पर निभर रहना पडता है। ऐसी स्थिति में एक यज्ञीय वातावरण ही ऐसा साधन हैं, जिसपर ऋतु व दिशा का कोई प्रतिबंध नहीं रहता। वह हर समय हर प्रकार से लाभकारी होता है। जिस तरह एक विशेष प्रकार की औषधि कई रोगों में एक समान लाभ पहुंचाती है, ठीक वैसे ही यज्ञों में भी एक प्रकार की औषधि विशेष का प्रयोग करनेपर लाभ मिलता है। पीसने, कूटने, अथवा उबालने से औषधि का एक स्थूल तत्व ही प्राप्त होता है, ताकि सब छिलका के रूप में बेकार चला जाता है, किन्तु हवन द्वारा किसी भी औषधि का तत्व किसी भी प्रकार से नष्ट नहीं होता है, वे सारे के सारे अपनी पूरी शक्ति के साथ विस्फुटित होकर वायु मण्डल में मिल जाते है।

(शेष अगले अंक में...)

-पुरोहित, आर्य समाज,
रांची (झारखण्ड)
मो.९९५५१४२३४३

आर्य समाज गांधी चौक लातूर का वार्षिकोत्सव

एक समय वैदिक धर्म के प्रचार का तथा हैद्रराबाद स्वतन्त्रता संग्राम का केन्द्र रही महाराष्ट्र की प्रसिद्ध पुरानी आर्य समाज, गान्धी चौक, लातूर की वार्षिकोत्सव आगामी दि. २५, २६ व २७ मार्च २०१६ को धूमधाम के साथ मनाया जा रहा है। जानेमाने वैदिक प्रवक्ता, लेखक व सम्पादक प्रो. डॉ.धर्मवीरजी (प्रधान, परोपकारिणी सभा, अजमेर) इस अवसर पर प्रमुख व्याख्याता के रूप में आमन्त्रित हैं तथा आर्य भजनोपदेशक के रूप में श्री पं. भूपेन्द्रसिंहजी आर्य पधार रहे हैं।

प्रातः यज्ञ, प्रवचन तथा आध्यात्मिक विषयों पर प्रवचन तथा रात्रि में विभिन्न राष्ट्रीय सामाजिक, धार्मिक व समसामयिक विषयोंपर व्याख्यान तथा भजन होते रहेंगें। साथ ही शंकासमाधान, महिला सम्मेलन व महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा **आर्यसेवक गौरव समारोह** आदि कार्यक्रम भी इस वार्षिकोत्सव में सम्पन्न होंगें।

अतः इस उत्सव में आर्य जनों को पधारने का अनुरोध आर्य समाज के प्रधान एड. हरिश्चन्द्रजी पाटिल, उपप्रधान ओमप्रकाशजी पाराशर, मन्त्री पराण्डेकर, कोषाध्यक्ष पराण्डेकर, बाबुरावजी तेरकर आदियों ने किया।

ऋषिमेले की भव्यता

– डॉ. नयनकुमार आचार्य

संसार में बढते अज्ञान, अविद्या, अन्धविश्वास, पाखण्ड व आतंकवाद को मिटाने के पवित्र संकल्प के साथ महर्षि स्वामी दयानन्द के १३२ वे बलिदानदिवस के उपलक्ष्य में दि. २०, २१ व २२ नवम्बर २०१५ को ऋषि उद्यान, अजमेर में आयोजित ऋषिमेला काफी सफल रहा ।

दि. २० नवम्बर को वेदपारायण यज्ञ के पश्चात् सरस्वती भवन के सम्मुख मैदान में प्रातः १०.३० बजे परोपकारिणी सभा के प्रधान डॉ. धर्मवीरजी के करकमलों से ऋषि मेले का उद्घाटन हुआ । गुरूकुल के ब्रह्मचारियों ने ओ३म् ध्वजगीत एवं 'हम करे राष्ट्र आराधन!' यह राष्ट्रगीत गाया । अपने उद्घाटकीय सम्बोधन में प्रधान डॉ. धर्मवीरजी ने ओजस्वी विचार रखे । उन्होंने कहा – 'ऋषि दयानन्द ने देश-देशान्तर व द्विप-द्विपान्तर में वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार के उद्देश्य से आर्य समाज व परोपकारिणी सभा की स्थापना की थी । दया शब्द व्यर्थ नही है । किसी भी प्रकार के पाखण्ड का विरोध करना हमारा आद्य कर्तव्य है । धर्म के नामपर कोई अशान्ति फैलाता हो, तो वह सहन नहीं होगा । समग्र विश्व के संकट का कारण बढता अन्याय व अत्याचार है । दयानन्द का जीवन हमें अन्याय से लडने की प्रेरणा देता है । स्वामीजी ने हमें शाश्वत सत्य की राह पर चलते हुए असत्य से समझौता न करने का सन्देश दिया है । आर्य के वातावरण में दयानन्द की वसीयत हम सभी को वैदिक विचारों के प्रचार हेतु सदैव अग्रसर रहने की प्रेरणा देती है । अन्याय, अभाव, अत्याचार को समाप्त करने के लिए कृतसंकल्पित होना ही दयानन्द के लिए सच्ची श्रद्धाजंलि होगी । संसार की बिगडती परिस्थितियों में आज आर्य विचारों की प्रासंगिकता अधिक महसूस हो रही है । वर्तमान की अव्यवस्था, पाखण्ड व अविचारों की आंधी को मिटाने की चुनौती हमारे सम्मुख है । इस चुनौती का स्थायी समाधान दयानन्द के विचारों में समाहित है । आज सारा संसार पीडित है अन्याय के कारण ! धर्म के नाम पर साम्प्रदायिकता को बढावा देते हुए विश्वभर में आतंकवाद फैलाना, यह एक तरह से मानवता को मिटाना है, जिसका प्रखर विरोध दयानन्ददर्शन करता है । अन्याय, अत्याचार व अज्ञान से पीडित सारे विश्व को वेदज्योति से आलोकित करने हेतु प्रतिज्ञाबद्ध होना, यह प्रत्येक ऋषिभक्त का परम कर्तव्य है ।'

इसके पश्चात् मुख्य समारोह स्थल पर पं. भूपेन्द्रसिंहजी के भजन और गणमान्य

विद्वानों के व्याख्यान सम्पन्न हुए। सरस्वती भवन में अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेदपीठ दिल्ली व अनुसन्धान केन्द्र (परोपकारिणी सभा) के संयुक्त प्रयास से प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी **वेदगोष्ठी** की शुरूआत हुई । **भारतीय मतसम्प्रदाय और वेद** इस विषयपर विद्वानों अपने शोधपत्र प्रस्तुत किये ।

दोपहर वर्तमान में आर्य समाज की दशा और दिशा इस विषयपर आयोजित सत्र में सर्वश्री स्वामी सुधानंदजी, प्रो.राजेंद्रजी जिज्ञासु, महाराष्ट्र सभा के मंत्री माधवरावजी देशपांडे, पं. रामनिवासजी गुणग्राहक आचार्य विजयपालजी आदीयोंने अपने विचार प्रस्तुत किये । सत्र का संचालन पं. सत्येन्द्रसिंहजी आर्य ने किया । रात्रिकालीन सत्र में आर्य जगत् के संन्यासी स्वामी आचार्य विजयपालजी (गुरूकुल झज्जर), डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार (कुरूक्षेत्र), डॉ. सुरेन्द्रकुमारजी (कुलपति गुरूकुल कांगडी वि.वि.हरिद्वार), प्रसिद्ध इतिहासवेत्ता प्रो. राजेन्द्रजी जिज्ञासु, डॉ. वेदपालजी (बडौत) आदियों ने मौलिक विचार रखें ।

इस दिन प्रातः यज्ञोपरान्त समारोह में **संस्कृत व संस्कृति रक्षा सम्मेलन** सम्पन्न हुआ, जिसकी अध्यक्षता वेदों के मर्मज्ञ आचार्य श्री सत्यानन्दजी वेदवागीश ने की । इस सम्मेलन में आचार्य ओमप्रकाशजी, आचार्य डॉ. सूर्यादेवी चतुर्वेदा, आचार्य कर्मवीरजी, डॉ. नयनकुमार आचार्य आदियों ने विचार रखें । सभी वक्ताओ ने संस्कृत की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए विश्व की सारी समस्याओं का निवारण संस्कृत द्वारा ही हो सकता है, यह बात कहीं ।

कन्या गुरूकुल शिवगंज से पधारी आचार्या सूर्यादेवी चतुर्वेदा ने कहा कि संस्कृत का शब्दभण्डार बहुत बडा है । संस्कृत के व्याकरण के सम्मुख अन्य भाषाएं टिक नहीं पाती । भारतीय भाषाओं सहित विदेशों की भी कई भाषाओं का मूलाधार संस्कृत ही है। गुरूकुल आबु पर्वत के आचार्य श्री ओमप्रकाशजी ने स्मरण दिलाया कि मध्यकालीन युग में अल्पमति विद्वानों ने संस्कृत के मढगढन्त श्लोक रचकर स्त्रियों व दलितों पर अत्याचार ढहाये, जिसका परिणाम निकला कि आज भी नवसुधारवादी लोग संस्कृत की ओर संकीर्णता से देखते हैं । इससे संस्कृति के मूलभूत आदर्शों की रक्षा कैसे हो सकती है? समारोह के यशस्वी मंच संचालक आचार्य कर्मवीरजी ने कहा कि संस्कृत का संरक्षण व संवर्धन पाणिनीय अष्टाध्यायी, व्याकरण महाभाष्यादि ग्रन्थों के पठन-पाठन विधि से हो सकता है । इसके लिये आर्ष गुरूकुलिय शिक्षापद्धति अत्यंत उपयुक्त सिद्ध होती है।

महाराष्ट्र से पधारे डॉ. नयनकुमार

आचार्य ने अपना वक्तव्य संस्कृत में रखा । उन्होंने कहा कि संस्कृत केवल भाषा ही नहीं, अपितु सुसंस्कारित आचार- विचार व एक समृद्ध जीवन शैली है । नासा के वैज्ञानिक जिस विश्वास के साथ आगामी कुछ ही वर्षों में संस्कृत का विश्वव्यापी रूप देखने मनीषा रख रहे हैं, इसके पीछे मात्र संस्कृत भाषा की वैयाकरणीय परिपूर्णता, वैज्ञानिकता व सरल - सुगम्यता ही है । अध्यक्षीय समापन भाषण में वेदविद् आचार्य सत्यानन्दजी वेदवागीश ने कहा कि संस्कृत के बिना संस्कृति की रक्षा कैसे सम्भव है ? आज हमारे वेदविद्यारूपी संस्कृत भण्डार का प्रचार व प्रसार होना आवश्यक है । **'सा प्रथमा संस्कृति या विश्ववारा ।'** इस वेदवचन से यह सिद्ध होता कि संसार के समग्र दुःखों का निवारण करने का सामर्थ्य रखनेवाली हमारी संस्कृति निश्चयेन सर्वाग्रणी, श्रेष्ठ व आद्या है ।

अपराह्न आयोजित आर्य युवक सम्मेलन में डॉ. मंजुलता शर्मा, श्री श्रुतिशील झंवर, कु. आरूषी आर्य, प्रा. राजेन्द्रजी जिज्ञासु आदियों ने विचार रखें । सत्र का संचालन श्री राजवीर आर्य ने किया । सभी वक्ताओं ने आर्य समाज में युवकों को योग्य दिशा देने के साथ ही उन्हें रचनात्मक कार्यों के लिए आगे लाने का आवश्यकताओं पर बल दिया ।

इसी समारोह में आर्य जगत् के इतिहासवेत्ता प्रा. राजेन्द्रजी जिज्ञासु को परोपकारिणी सभा की ओर से आजीवन उत्कृष्ट सेवा पुरस्कार से सम्मानित किया गया । उन्हें पुरस्कार स्वरूप १,५१,०००/- रूपयों की भेटराशि, शाल, श्रीफल एवं प्रशस्तिपत्र प्रदान किये गये । श्री जिज्ञासुजी के जीवन व कार्योंपर श्री सत्येन्द्रसिंहजी आर्य ने प्रकाश डाला । इस अवसर पर पं. विरजानन्दजी देवकरणी व डॉ. वेदपालजी द्वारा सम्पादित **'महर्षि के पत्रव्यवहार'** इस प्रसिद्ध ग्रन्थ का विमोचन सभाप्रधान डॉ. धर्मवीरजी तथा मन्त्री श्री ओममुनिजी के करकमलों से सम्पन्न हुआ । हैदराबाद से पधारे आन्ध्रभूमि के सम्पादक श्री एम.वी. आर. शास्त्री ने इस समारोह में अपने प्रेरक विचार रखे । अपने मौलिक प्रबोधन द्वारा उन्होंने श्रोताओं में चेतना जाग्रत की ।

रात्रिकालीन सत्र का विषय **'आर्य समाज के सिद्धान्तों की रक्षा'** यह रहा । इस सत्र का अध्यक्षता हरयाणा आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री रामपालजी आर्य ने की । इस सत्र में प्रो.डॉ. दिनेशचंद्र शर्मा ने अपने वक्तव्य में कहा- 'शुद्धि का आन्दोलन विचारों के आधार पर होना चाहिए । इसके लिए महर्षि दयानन्द प्रणित आर्य विचारधारा ही परिपूर्ण व हर युग के लिए प्रासंगिक प्रतीत होती है ।' वैदिक विद्वान डॉ. वेदपालजी ने मौलिक विचार रखते हुए आज को बदलते परिवेश में

स्वामीजी के विचारों की महती आवश्यकता पर बल दिया । उन्होंने कहा- सम्प्रति सामाजिक समरसता, पारिवारिक सौहार्दता, धार्मिक सहिष्णुता आदि बातों को लेकर देश में अस्थिरता का वातावरण है । आज राष्ट्रीय चिन्ता के स्थान पर व्यक्तिगत चिन्ता आगे दिखाई दे रही है । वैश्विक स्तर पर विविध क्षेत्र में विनाश की स्थिति है । मानवता की दृष्टि प्रायः लुप्त हो रही है । इनका समाधान यदि म. दयानन्द देते हैं, तो दयानन्द की प्रासंगिता हर काल में सिद्ध होती है । दयानन्द का चिन्तन पुराना नहीं, बल्कि सूरज उगने की भांति सदैव नया ही नया अनुभूत होता है । इस दृष्टि से दयानन्द हमें सदैव प्रासंगिक लगते हैं । उनका मानवतावादी दृष्टिकोन, धार्मिक चिन्तन, पारिवारिक व सामाजिक विचारधारा आदि सबकुछ व्यक्ति, देश व कालसापेक्ष रहा है । साथ ही स्वामीजी का राष्ट्रीय चिन्तन भी व्यापक रहा है ।

अन्तिम दिन यज्ञशाला में चतुर्वेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति हुई । यजमान के रूप में राजस्थान के लोकायुक्त श्री सज्जनसिंह कोठारी व सभा के कोषाध्यक्ष श्री सुभाषजी नवाल सपरिवार सम्मिलित हुए । यज्ञ के बाद सभा के प्रधान डॉ. धर्मवीरजी ने विद्वत्तापूर्ण प्रवचन में आध्यात्मिक विचार रखे । उन्होंने कहा - विवशता के कारण मनुष्य उपासना स्थलोंपर जाता हैं, यह उचित नहीं । ऋषि दयानन्द की अद्‌भुतता इसी में रही कि उन्होंने हमें गुरू की आलोचना तक का अधिकार दिया, जो कि अन्य किसी ने नहीं दिया । इस अवसर पर यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य श्री सत्यानन्दजी वेदवागीश, प्रा. राजेन्द्रजी जिज्ञासु सभामंत्री श्री ओममुनिजी आदियों ने विचार रखे ।

प्रातः ११ बजे पं. भगवद्दत्त शोध शताब्दी सम्पन्न हुआ । इस सम्मेलन में मुख्य वक्ता के रूप में प्रा. राजेंद्रजी जिज्ञासु ने विचार रखे । उन्होंने कहा- वैदिक वाङ्मय, भारतीय संस्कृति एवं आर्य समाज के वैदिक साहित्य के इतिहास व सत्यार्थ प्रकाश तथा महर्षि दयानन्द के पत्र व्यवहार पर पं. भगवद्दत्तजी ने बहुत बडा काम किया है । इन्हें आर्य समाज कभी भी भूला नहीं पायेगा । दोपहर **पाखण्ड खण्डन सम्मेलन** सम्पन्न हुआ, जिसका संचालन पं. रामनिवासजी गुणग्राहक ने किया । इस सम्मेलन में महाराष्ट्र से पधारे डॉ. नयनकुमार आचार्य, वैदिक विद्वान आचार्य पं. सत्यानंदजी वेदवागीश एवं पं. सत्येंद्रसिंहजी आर्य ने विचार रखे । रात्रि में ऋषिमेले का अन्तिम सत्र सम्पन्न हुआ, जिसमें सभा प्रधान डॉ. धर्मवीरजी एवं पं. सत्येन्द्रसिंहजी आर्य ने अपने वक्तव्य रखे । प्रधानजी ने सभी के सादर धन्यवाद व्यक्त किये ।

■■■■■

आर्यविभूतियों का गौरव - सश्रद्ध ऋणाभिव्यक्ति

-डॉ. ब्रह्ममुनि (प्रधान, म.आ.प्र.सभा)

काम नेकी के जो कर गये
उनकी रोशन कहानी रहेगी !

जिन्होंने पवित्र उद्देश्य के साथ वैदिक सिद्धान्तों पर चलते हुए जीवनयापन किया, ऐसे आर्यजनों का व्यक्तिगत जीवन तो यशस्वी रहा ही, किन्तु आर्य समाज की शान व मान बढाने का भी कार्य उन्होंने किया है । महर्षि दयानन्द की विशुद्ध मानवतावादी विचारधारा को अपनाते हुए उन्होंने अपनी आर्यत्व पहचान को समाज में प्रतिष्ठापित करने का प्रेरणादायी व पवित्र कार्य किया । आर्य समाज के प्रभाव से कई आर्यजन देश की स्वतन्त्रता के लिए लढते रहे, अंग्रेजी हुकुमत हो या निजामी सल्तनत ? अपने शौर्य व साहस का परिचय देते हुए उन्होंने उनके विरूद्ध आन्दोलन चलाया, जेल गये, अनेकों अत्याचार सहें, प्राण तक न्योछावर किये ! देशरक्षा के साथ ही अपने वेदानुकूल आदर्श जीवन द्वारा समाज व राष्ट्र के नवनिर्माण में पूरा योगदान दिया । कई आर्य गृहस्थियों ने वैदिक धर्म के प्रचार व प्रसार के लिए उदारहृदय से अपनी धनराशियां प्रदान की । वैदिक विद्वानों के आतिथ्यसत्कारादि में श्रद्धा भावना के साथ पूरा सहयोग देते हुए सेवा करते रहे । इन्हीं के कारण आज भी आर्य समाज जीवित है । देहातों व नगरों में महर्षि दयानन्द के सिध्दान्तो का प्रभाव इन्हीं आर्य विभूतियों के कारण देखने मिलता हैं ।

आर्य विभूतियों का गौरव -

ऐसी आर्यमय जीवनज्योतियों से आनेवाली पीढी को प्रेरणा मिले तथा उनका यथोचित सम्मान हो, उनके आदर्श जीवन व कार्यों के प्रति ऋणाभिव्यक्ति हो और साथ उनके परिवारों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त हो, इन उद्देश्यों से उपरोल्लिखित आर्य विभूतियों का गौरव व सम्मान होना, आवश्यक है । यदि हम अपने राष्ट्रनिर्माताओं, समाजोद्धारकों व पुरानी पीढी के आदर्श व्यक्तियों का यशोगान व गौरव नहीं करेंगे, तो हम कृतघ्न सिद्ध होंगें । समाज के लिये दिये उनके त्याग, समर्पण व बलिदान को नयी पीढी कैसे याद करेंगी ? उनका क्रान्तिकारी इतिहास कैसे जीवित रहेगा ? अतः उन अनगणित आर्यजनों का गौरव (जिनमें कुछ दिवंगत हुए, तो कुछ वर्तमान में जीवित हैं) होना अनेकों दृष्टि से काफी उपयुक्त सिद्ध होता है ।

सभाद्वारा गौरव-एकऐतिहासिक पहल

इस दृष्टि से महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा बहुत ही सजग है । महाराष्ट्र की आर्य विभूतियों को गौरवान्वित करने की ऐतिहासिक पहल करनेवाली महाराष्ट्र सभा

शायद देश की पहली प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा होगी । लगभग १५ वर्ष पूर्व सभा ने अनेकों दिवंगत व जीवित कान्तिकारी व प्रचारक आर्य नेताओं व कार्यकर्त्ताओं का सम्मान किया था, जिनमें पू. उत्तममुनिजी, भाई श्यामलालजी, भाई बन्सीलालजी, पं. कर्मवीरजी, पू. शेषरावजी वाघमारे (आनन्दमुनिजी), पं. वीरभद्रजी आर्य, स्वामी सन्तोषानन्दजी, पं. गणपतरावजी कथले, घाटपिंपरी के चार हुतात्मा (तेली, माळी, टेके दम्पती) आदियों का समावेश था । बाद में विद्यार्थियों के निर्माता पू. हरिश्चंद्रजी गुरूजी (स्वामी श्रद्धानन्दजी) का भी गौरव किया गया । इन सभी महात्माओं की स्मृतियों व गौरव में धनराशियां संकलित कर स्थिरनिधियां सभा में स्थापित की गयी, जिनके ब्याज से से सभा आज तक वेदप्रचार व समाज निर्माण का कार्य कर रही हैं ।

इस वर्ष १७ आर्य विभूतियों का गौरव

इस वर्ष से सभा ने प्रतिवर्ष विभिन्न स्थानों के आर्यजनों का गौरव करने का निर्णय लिया है, तद्नुसार आगामी दि. २७ मार्च २०१६ को निम्नलिखित आर्य विभूतियों का गौरव होने जा रहा है । -

१) स्वा.सै.बापुरावजी मास्तर (उ.बाद)
२) स्वा.सै. पोशट्टीदादा उनग्रतवार (देगलुर)
३) स्व.शालिग्रामजी बसैये (सम्भाजीनगर),
४) स्व.रामचन्द्रावजी मोरे (बोटकूळ)
५) स्व.लेखराजजी आर्य (धुलियां)
६) स्व.रामपालजी लोहिया (परली-वै.)
७) स्वा.सै. बलीरामजी पाटील, (निलंगा),
८)स्वा.सै.हिरामनजी डोईजोडे (औराद श.),
९)स्वा.सै.तुकारामजी गंजेवार (धर्माबाद),
१०)स्वा.सै.मन्मथ चिल्ले (करडखेल),
११)स्वा.सै.गुलाबचंद लदनिया (हिंगोली)
१२) श्री डुबेवारजी (हिंगोली)
१३)श्री कृष्णचंद्रजी आर्य (पिंपरी पुणे)
१४)श्री माणिकरावजी भोसले (लातूर)
१५)श्री बद्रीनारायण तोष्णीवाल (हदगांव)
१६)श्री बाबुरावजी तेरकर (लातूर)

इन सभी महनीय आर्य विभूतियों का नाम आर्य जगत् में अजरामर रहें, इनके परिवारवालो का सम्मान हो इस उद्देश्य से इनकी स्मृतियों व गौरव में सर्वत्र वैदिक धर्म का प्रसार व प्रचार हो इस उद्देश्य से सभा स्थिर निधियों की स्थापना कर रही हैं अतः प्रान्तीय सभा के पदाधिकारी, सदस्यगण, उन-उन स्थानों के आर्य समाज के कार्यकर्ता, स्थानीय दान दाता, सामाजिक कार्यकर्त्ता एवं परिवार के लोग इन स्थिर निधियों के निर्माण हेतु प्रयत्न करें । कम से कम १ लाख, व अधिक से अधिक ५ लाख रूपयों की स्थिर निधियां बनने की अपेक्षा हैं । इस पवित्र कार्य के लिये सभी आर्य जन एकजुट होकर प्रयत्न करें व अन्यों को भी प्रेरणा दे, जिससे उपरोक्त सभी आर्य विभूतियों का यथोचित गौरव हो सके ।

श्री व सौ. चिल्ले वक्तृत्व स्पर्धा में प्रशान्त शिंगाडे प्रथम

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में आर्य समाज परभणी के विशेष सहयोग से दि. २० दिसम्बर २०१५ को राज्यस्तरीय अन्तर्महाविद्यालयीन वक्तृत्व स्पर्धा सम्पन्न हुई ।

स्वा.सै.श्री आनन्दमुनिजी (मन्मथअप्पा) एवं सौ. कलावतीदेवी चिल्ले के गौरव में आयोजित इस भाषण स्पर्धा में प्रथम पुरस्कार परली के वैद्यनाथ महाविद्यालय के छात्र श्री प्रशान्त सुधाकर शिंगाडे ने हासिल किया, जब कि द्वितीय पुरस्कार के. बी. महाविद्यालय अंबाजोगाई के छात्र चि.सचिन गोविंद देवकते ने तथा तृतीय पुरस्कार परभणी के वसन्तराव नाईक कृषि विद्यापीठ में अध्ययनरत छात्र चि. कृष्णा बाजीराव ठाकरे ने प्राप्त किया । प्रस्तुत प्रतियोगिता के लिए **'विश्वशान्ति हेतू महर्षि दयानन्द के विचार'** यह विषय रखा गया था । इस स्पर्धा के निर्णायक के रूप में श्री दिगम्बर देवकते (शास्त्री), श्री मधुकर पांचाळ एवं सौ. लीलावती राजेन्द्र जगदाले ने भूमिका निभाई । तीनों विजेताओं को सर्वश्री विजयकुमारजी अग्रवाल, डॉ. धनंजय औंढेकर, डॉ. नयनकुमार आचार्य आदियों के करकमलों से क्रमशः रू. २०००/- (प्रथम), रू. १५००/- (द्वितीय) व रू. १०००/- (तृतीय) प्रमाणपत्र व वैदिक साहित्य प्रदान किये गये । सूत्रसंचलन श्री सुरेश शास्त्री (मुण्डे) ने किया ।

प्राचार्य श्री तुंगारजी का गौरव सम्पन्न

प्रसिद्ध पत्रकार तथा प्रान्तीय सभा के उपमन्त्री प्राचार्य श्री देवदत्तजी तुंगार इस वर्ष अपनी आयु के ८१ वर्ष पार कर चुके हैं । इस उपलक्ष्य में नान्देड के जिलाधीश कार्यालय के सभागृह में आयोजित विशेष समारोह में उनका गौरव किया गया । पूर्व सांसद डॉ. व्यंकटेशजी काब्दे की अध्यक्षता में सम्पन्न हुए इस कार्यक्रम में सर्वश्री कवि प्रा. लक्ष्मीकान्त ताम्बोली, सदाशिवराव पाटिल, सम्पादक केशव घोणसे पाटिल आदि प्रमुख अतिथि के रूप में उपस्थित थे । इस उपलक्ष्य में **सत्यार्थ प्रकाश समीक्षा विशेषांक** का विमोचन भी हुआ ।

सम्मान समारोह में श्री देवदत्त तुंगारजी ने अपने सफल जीवन का श्रेय महर्षि दयानन्द की विशुद्ध मानवतावादी विचारधारा को दिया । उन्होंने कहा - मुझपर सर्वाधिक प्रभाव आर्य समाज के संस्थापक ऋषिवर दयानन्द के प्रखर सत्यवादी व्यक्तित्व का है । स्वामीजी मेरे प्रेरणास्थान

रहें हैं । जिनसे मुझे निरन्तर श्री व सौ. जीवनभर नई ऊर्जा मिलती रहती है । कवि श्री ताम्बोली ने बताया कि **सत्यार्थ प्रकाश** यह ग्रन्थ सही अर्थों में वैश्विक स्तर पर सुख, शान्ति व सौहार्दता की स्थापना करनेवाली महान रचना है । इस अवसर पर प्रा. मठवाले सहित तुंगार परिवार के सदस्य एवं आर्य कार्यकर्त्ता उपस्थित थे । समारोह का संचालन प्रा. विश्वाधार देशमुख ने किया ।

नलिनी देशपाण्डे का घाटकोपर में व्याख्यान

आर्य समाज पिम्परी-पुणे की सक्रिय सदस्या सौ. नलिनी माधव देशपाण्डे हाल ही में आर्य समाज घाटकोपर (मुम्बई) में आयोजित आर्य महिला सम्मेलन में मुख्य वक्त्री के रूप में सम्मिलित हुई । वैदिक विद्वान प्रो.डॉ. सुरेन्द्रकुमारजी (संस्कृत विभाग म.दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक) की अध्यक्षता में सम्पन्न हुए इस सम्मेलन में श्रीमती देशपाण्डे ने सम्बन्धों में भरे है मधुर रंग इस विषय पर व्याख्यान दिया ।

९ विद्धान् व कार्यकर्त्ता पुरस्कृत

परोपकारिणी सभाद्वारा आयोजित ऋषिमेलेपर आर्यजगत के ९ विद्वानों व कार्यकर्त्ताओं को सम्मानित कर उनका अभिनन्दन किया गया । इतिहासविद् प्रो. राजेन्द्रजी जिज्ञासू को आर्य मार्तण्ड पुरस्कार (रू. १०,१०००) प्रदान कर गौरवान्वित किया गया । साथही सर्वश्री आचार्य सत्यानन्दजी वेदवागीश, डॉ. रामप्रकाश वणी, आचार्य सोमदेवजी, आचार्य सत्येन्द्रजी, डॉ. धर्मवीरजी कुण्डू, आचार्य यशवीरजी शास्त्री एवं गौरव आर्य को विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित किया गया

डॉ.नयनकुमार आचार्य को कार्यकर्त्ता पुरस्कार

वैदिक गर्जना के सम्पादक डॉ.श्री नयनकुमार आचार्य को **'आर्य कार्यकर्त्ता'** पुरस्कार से सम्मानित किया गया । आर्य विद्वान् श्री इन्द्रजित्देवजी आर्य द्वारा उनकी धर्मपत्नी स्व. श्रीमती सुमनलता देवीजी आर्य की स्मृति में रखा गया यह पुरस्कार वैदिक विद्वान् आचार्य सत्यानन्दजी वेदवागीश व वेदविदुषी आचार्या डॉ.सूयदिवी चतुर्वेदा के करकमलों से प्रदान किया गया । सम्मान के रूप में प्राप्त पुरस्कार राशि (रू.११,०००/-) डॉ.नयनकुमारजी ने परोपकारी सभा को वेदप्रचार कार्य हेतु प्रदान की ।

उपर्युक्त सभी पुरस्कृत विद्वानों व कार्यकर्त्ताओं का
महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से हार्दिक अभिनन्दन..!

माता-पिता के गौरव में दोडिया परिवार ने बनवायी यज्ञशाला

त्रिदोषनाशकयज्ञ व भजनप्रवचनादि कार्यक्रम सम्पन्न

अपने जन्मदाता माता-पिता के अमृतमहोत्सव पर धार्मिक व परोपकारी कार्यों के माध्यम से समाज के सम्मुख आदर्शो की स्थापना करनेवालें पुत्ररत्नों की संख्या कुछ कम नहीं । परली के मातृ-पितृ भक्त श्री जयकिशोरजी दोडिया व उनकी धर्मपत्नी सौ. सरोजदेवी दोडिया इन्हीं में से एक उत्साही आर्य दम्पती हैं ।

अपने ८६ वर्षीय पूज्य पिता श्री हरिप्रसादजी एवं ८२ वर्षीय माताजी सौ. रूक्मिणीदेवी दोडिया के अमृतमहोत्सव को धार्मिक, सामाजिक व परोपकारी उपक्रमों का रूप देकर समाज को नई दिशा देने का उन्होंने सफल प्रयास किया है । आपने अपने परिवार की ओर से लगभग तीन लाख रूपयों की लागत से आर्य समाज परली में महर्षि दयानन्द यज्ञशाला का नवनिर्माण किया, जिसके उद्घाटन के उपलक्ष्य में दि. ५, ६, ७ व ८ दिसम्बर २०१५ को **'त्रिदोषनाशक यज्ञ व भजन, प्रवचनादि कार्यक्रमों'** का आयोजन हुआ। रांची (झारखण्ड) से आमन्त्रित पर्यावरणविशेषज्ञ डॉ. प्रद्युम्नकुमारजी शास्त्री के ब्रह्मत्व में यह यज्ञ होता रहा, जिसमें उपस्थित आर्यजन प्राणायाम के साथ श्रद्धापूर्वक आहुतियां प्रदान करते रहें । आर्य भजनोपदेशक पं.सन्दीपजी वैदिक के ईशभक्ति, धार्मिकता, व्यक्ति परिवार समाज व राष्ट्रनिर्माण आदि विषयों पर भजन होते रहें भजनों के तत्पश्चात् डॉ. प्रद्यम्नकुमारजी अपने व्याख्यान में यज्ञप्रक्रिया द्वारा नानाविध रोगों का निवारण, पर्यावरण रक्षण आदि विषयों का विश्लेषण करते रहे । आज के परिप्रेक्ष्य में यज्ञविज्ञान कितना आवश्यक है ? यज्ञ के अभाव में संसार में दुःख-दरिद्रता व प्रदूषण के बढते भस्मासूर के कारण प्राणिमात्र को कितनी हानियां उठानी पड रही हैं । इन विचारों की सरल शब्दों में विवेचना की ।

अन्तिम दिन पूर्णाहुति यज्ञ में दोडिया परिवार के सदस्यगण, रिश्तेदार, सम्बन्धी, आर्यजन आदियों ने अपनी सश्रद्ध आहुतियां प्रदान की । दोडियाजी के पौत्र का चूडाकर्म संस्कार भी इस अवसर पर सम्पन्न हुआ । तत्पश्चात् सभा के संरक्षक पू. स्वामी श्रद्धानन्दजी सरस्वती की अध्यक्षता में तथा सर्वश्री डॉ. ब्रह्ममुनिजी ,माधवराव देशपाण्डे, जुगलकिशोरजी लोहिया, चंदुलालजी बियाणी, पं.सन्दीपजी वैदिक, डॉ. प्रद्युम्नकुमारजी शास्त्री आदियोंकी उपस्थिति में नवनिर्मित यज्ञशाला का उद्घाटन एवं माता-पिता का अमृत महोत्सव समारोह सम्पन्न हुआ । **(संपूर्ण वृत्तांत मराठी के विभाग मे पढें)**

लातूर, निलंगा व औराद में ध्यान योगशिविर

आध्यात्मिक सुख को पाने की उत्कट इच्छा रखनेवाले व सांसारिक दुःखों से संत्रस्त व योगप्रेमी सज्जनों, माता-बहनों व नौजवानों से निवेदन है कि वे प्रान्तीय सभा द्वारा रामनगर -लातूर (१४ से २४ जनवरी), निलंगा (२५ से ३१ जन.)व औराद शहाजानी (१ से ७ फरवरी) इन तीन स्थानों पर रखे गये क्रियात्मक ध्यानयोग शिविरों में अधिक सी अधिक संख्या में भाग लेवें । प्रसिद्ध दार्शनिक विद्वान व योगप्रचारक पू. स्वामी अमृतानन्दजी सरस्वती के सान्निध्य में ये शिविर सम्पन्न हो रहें हैं, जिन्हें काफी प्रतिसाद मिल रहा हैं । योग व अध्यात्मप्रेमी, सज्जन व माता बहनें उपरोक्त शिविरों मे सम्मिलित होकर अपने शरीर, मन, आत्मा का विकास करें, यह आवाहन प्रान्तीय सभा मंत्री माधव देशपांडे ने किया है ।

सभाद्वारा आर्य सेवक स्थिरनिधि स्थापना हेतु अपील

जिन आर्य विभूतियों ने अपने जीवन में वैदिक सिद्धान्तों का पालन करते हुए समाज के सम्मुख एक प्रखर आर्य समाजी होने का आदर्श रखा है, ऐसे महाराष्ट्र के लगभग १६ आर्यसेवकों का गौरव करने का निश्चय महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा ने लिया है । इनमें कई लोग दिवगंत हो चुके हैं, तो कई इस समय जीवित हैं । इन आर्य सत्पुरूषों के जीवन व कार्य का सम्मुचित सम्मान हो तथा समाज के सम्मुख उनका आदर्श प्रस्थापित हो, जिससे कि भविष्य में आर्यसमाज का प्रचार व प्रसार होने में काफी मदद मिल सकती है ।

इन स्थिरनिधियों की स्थापना का मुख्य उद्देश्य आर्य विभूतियों के जीवन व कार्यों को गौरव करना है, ताकि आनेवाली पीढी को आर्य विचारों की तथा सदाचारयुक्त जीवन जीने की प्रेरणा मिले । साथ ही गौरव मूर्तियों के परिवार जनों का भी सम्मान हो सके, यह भी इसके पीछे की भावना है ।

अतः आर्य सेवकों के गौरव में वेदप्रचार हेतु स्थापित होनेवाली स्थिरनिधियों को पूर्ण करने हेतु प्रान्तीय सभा के पदाधिकारी, आर्य समाज के कार्यकर्त्ता, समाज के प्रतिष्ठित लोग,मित्रजन, रिश्तेदार एवं परिवार के लोग प्रयत्न करें । इन गौरवमूर्तियों का सम्मान आगामी मार्च के अन्तिम सप्ताह में होगा । अतः सभी दानदाता उदारभावसे अपनी दानराशियां प्रदान कर सहयोग करें । -सभामंत्री

।। ओ३म् ।।

माझ्या मराठीचा बोलु कवतिके। परि अमृतातेही पैजेसीं जींके ।

ऐसी अक्षरेंचि रसिकें । मेळवीन ।। (संत ज्ञानेश्वर)

मराठी विभाग

सुभाषित सन्देश — भोगांमुळेच प्रपंच !

भोगा भङ्गुरवृत्तयो बहुविधास्तैरेव चायं भवः
तत्कस्यैव कृते परिभ्रमत रे लोकाः कृतं चेष्टितैः ।
आशापाशशतोपशान्तिविशदं चेतः समाधीयताम्
कामोच्छित्तिवशे स्वधामनि यदिश्रद्धेयमस्मद्वचः ।।

भोगांची स्थिती क्षणभंगुर असून त्या भोगामुळेच हा प्रपंच झाला आहे. तस्मात लोकहो, अशा विषयासाठी व्यर्थ का फिरता ? तर आता हा खटाटोप पुरे करा आणि जर माझ्या वचनावर विश्वास असाल तर मी सांगतो असे करा. 'आशारूपी अनेक पाशांतून मुक्त झाल्यामुळे स्वच्छ झालेले चित्त कामोच्छेदास कारणभूत असे जे आत्मस्वरूप त्याचे ठायी दृढ करा, म्हणजे कृतार्थ व्हाल.' (भर्तृहरिकृत वैराग्यशतक)

दयानंदांची अमृतवाणी — उपासना (भक्ती)

*** देव म्हणजे विद्वान असाही अर्थ होतो कारण शास्त्रात 'विद्वांसो हि देवाः । असे' म्हटले आहे. * पूजा शब्दाचा अर्थ सत्कार होतो. म्हणून आई-वडील, गुरू, अतिथी, विद्वान यांची पूजा केली पाहिजे. * जसे ईश्वराचे गुण कर्म स्वभाव पवित्र आहेत तसे स्वतःला बनविण्याच्या प्रयत्न करणे म्हणजे उपासना. * ईश्वराला सर्वव्यापक व स्वतःला व्याप्य समजून आपण ईश्वराजवळ आहोत व ईश्वर आपल्याजवळ आहे, असा निश्चय योगाभ्यासाद्वारे प्रत्यक्षात करणे याला उपासना म्हणतात. * ज्ञान, सत्कर्माची फळे, परोपकार आणि हृदयात आनंदातिरेकाची भावना उत्पन्न होणे हे उपासनेचे फळ आहे.**

(महर्षी दयानंद रचित सत्यार्थप्रकाश-११ वा समुल्लास)

वेदांमध्ये गोहत्या, गोमांस भक्षण नाही

-प्राचार्य देवदत्त तुंगार

वेद शब्द विद् या धातुपासून बनला असून त्याचा अर्थ जाणणे म्हणजे व्यवहारत: ज्ञान असा होतो. आपल्या धर्माचे प्रमाणभूत ग्रंथ वेद आहेत. ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद आणि सामवेद हे चार वेद आहेत. लोकमान्य टिळकांनी हिंदू धर्माची व्याख्या करतांना जो वेदप्रामाण्य मानतो, म्हणजे जो वेदाला मानतो, तो हिंदू असे म्हंटले आहे. ऋषी, मुनी, संत, महात्मे, महापुरुष यांनी वेदाची महती गायिली आहे. आधुनिक काळात वेदाचे महत्व पुन्हा पटवून देण्याचे ऐतिहासिक महत्वपूर्ण कार्य आर्य समाजाचे संस्थापक महर्षी स्वामी दयानंद सरस्वती यांनी केले असून त्यामुळेच त्यांना **वेदोद्धारक** म्हणजे वेदांचा उद्धार करणारे दयानंद असेही म्हणतात.

वेदांबद्दल अनेक समज, गैरसमज आहेत. वेदामध्ये पशुबळीची प्रथा आहे, हिंसा आहे, अश्लीलता आहे, अशा अनेक चुकीच्या समजुती समाजात होत्या आणि आहेत. याचे कारण वेदमंत्रांचा चुकीचा अर्थ लावणे हे आहे. महर्षी दयानंदांनी (१८२४ ते १८८३) मथुरेचे स्वामी विरजानंद यांच्याकडे वेदांचा कसून सखोल अभ्यास केला व गुरुंच्या आज्ञेप्रमाणे सर्व भारतभर प्रवास करुन वेदप्रचार केला. आर्य समाजाचे मुख्य ध्येय ठरले. त्यामुळे अनेक स्वातंत्र्य सैनिक आर्य समाजी असल्याचे दिसते. आर्य समाज ही सामाजिक सुधारणावादी व परिवर्तनवादी संस्था आहे.

*** दादरी गोहत्या व गोमांस भक्षण –**

उत्तर प्रदेशातील दादरी येथील अखलाख नामक मुस्लीम गृहस्थाने गोहत्या करुन गोमांसाचा साठा केला, अशा आरोपावरुन त्याची हत्या करण्यात आली व त्याच्या कुटुंबियांना मारझोड करण्यात आली. या प्रकरणी अधिक चौकशी झाली असता गोहत्या किंवा गोमांस भक्षण झालेच नाही, असे आढळून आले. यासंबंधी आरोप-प्रत्यारोप करण्यात येत असून देशभर विषारी वातावरण निर्माण होत आहे किंवा निर्माण करण्यात येत आहे. कोणत्याही माणसाची हत्या करणे गैरच आहे. आरोप खरे असोत की खोटे. एखाद्या मानवाची निर्घृण हत्या निषेधार्हच असून कायदा हातात घेऊन अतिरेकी हिंसा करणे कधीच समर्थनीय ठरु शकत नाही.

याप्रकरणी वादग्रस्त विधाने होत असून वेदांमध्ये गोमेध यज्ञात गाईची हिंसा होत असे. आपले पूर्वज गोमांस खात होते. आजही अनेक आदिवासी, अनेक जातींची माणसे गोमांस खातात, अशी विधाने

करण्यात येत आहेत. वेदांमध्ये खरे काय लिहिले आहे, हे समजून न घेताच, वेदमंत्रांचा कांही हितसंबंधी पाश्चात्य विद्वानांनी लावलेला चुकीचा अर्थ यामुळे वेदांमध्ये गोहत्या आहे, अशी निराधार टिका होत आहे. दयानंद स्वामींनी जे वेदभाष्य लिहिले आहे, जो वेदोपदेश केला आहे, त्यानुसार वेदांमध्ये व यज्ञांमध्ये कुठेही पशुबळीचा, हिंसेचा उल्लेख नाही. वेदज्ञानाला बदनाम करण्याचा हा प्रयत्न आहे. छत्रपती शिवाजी महाराजांपासून छत्रपती शाहू महाराजांपर्यंत सर्वांना वेदांबद्दल पूज्य बुद्धी व्यक्त केली असून वेदोक्ताचा अधिकार सर्वांना मिळावा, यासाठी आर्य समाजाच्या माध्यमातून छत्रपती शाहुंनी वेदोक्ताचा म्हणजेच ज्ञान संपादनाचा बहुजन समाजाला व सर्व मानवांना अधिकार आहे, हे स्वामी दयानंदांच्या वेदभाष्यातून दाखवून दिले. योगी अरविंदांनी यासबंधी म्हटले आहे की, वेद-भाष्याची गुरुकिल्ली दयानंदांनी उपलब्ध करुन दिल्यामुळे सर्वांना ज्ञानाची कवाडे खुली झाली आहेत. प्रसिद्ध साहित्यिक आधुनिक महाराष्ट्रातील अग्रगण्य विचारवंत पत्रकार न्यायाधीश गोपाळ हरी देशमुख उर्फ लोकहितवादी यांनीच वेद-भाष्य प्रकाशनाला स्वामी दयानंदांना सहकार्य केले. ही आपणां मराठी भाषिकांना अभिमानाची बाब आहे. मुंबई आणि अहमदाबाद येथील आर्य समाजाचे अध्यक्षपद लोकहितवादी देशमुख यांनी केवळ महर्षी दयानंदांनी सांगितल्यामुळेच स्वीकारले. प्राचीन काळातील कपिल, कणाद आदी ऋषींप्रमाणेच आधुनिक काळात **दयानंद** हे महान ऋषी आहेत, असे लोकहितवादी देशमुखांनी गौरवोद्गार काढले. तेंव्हा दयानंदांनी विनम्र भावनेने सांगितले की, कपील, कणाद यांच्या चरणधुळीच्या एका कणाएवढाही मी नाही, असे होते लोकहितवादी व दयानंद ! वेदांमध्ये गोपालन गोसंवर्धन करावे, गोहत्या करु नये, असेच ठाम प्रतिपादन केले आहे. हे ध्यानी घेतल्यास गोहत्या व गोमांस भक्षण यासंबंधीचा धुरळा संपुष्टात येऊ शकतो.

- गौरव स्थिरनिधी संदर्भात विशेष निवेदन -

आर्य सेवक गौरव स्थिरनिधीचा मूलोद्देश त्या थोर आर्यजनांचा यथोचित सन्मान, गौरव व त्यांच्या प्रती ऋण व्यक्त करणे व त्यांच्या पश्चात् त्यांच्या नावाने वैदिक धर्मप्रचाराचे कार्य होत राहावे हा आहे. सभेला केवळ आर्थिक दृष्ट्या भक्कम बनविणे कदापी नव्हें ! याकरिता दानदात्यांचा क्रम असा असावा- १) प्रांतीय आर्य सभेचे पदाधिकारी व सदस्य २) स्थानिक आर्य समाजाचे पदाधिकारी व कार्यकर्ते ३) समाजातील प्रतिष्ठित दानदाते ४) गौरव मूर्तींचे स्नेही,मित्र,आप्तजन,पाहुणे व कुटूंबीय.

परळीच्या गुट्टे परिवाराकडून वेदधर्मप्रचारास दोन लाखाची स्थिरनिधी

प्रेरक आर्य व्यक्तिमत्व - स्व.सदाशिवराव गुट्टे

आर्य समाज परळीचे एकनिष्ठ सक्रिय कार्यकर्ते श्री सदाशिवराव गुट्टे यांचे दीड वर्षापूर्वी दि. ७ जून २०१४ रोजी अल्पकालीन आजाराने दुःखद निधन झाले. या दुर्दैवी निधनामुळे त्यांच्या धर्मपत्नी सुशीलाबाई व गुट्टे परिवारावर दुःखाचा डोंगर कोसळला. घरातील प्रमुख कर्ता पुरूष गेल्याने कुटुंबाची अपरिमित हानी झाली. अशा दुःखाच्या परिस्थितीत श्रीमती सुशीलाबाई यांनी आपल्या पतिदेवांच्या स्मरणार्थ प्रांतीय सभेस १ लाख रू. तर परळी गुरूकुलास एक लाख रू. असे एकूण दोन लाख रू. दान केले. प्रांतीय सभेने गुट्टे परिवारांकडून एक लाख रू. दानांची स्थिरनिधी **स्व.सदाशिवराव गुट्टे स्मृति वेदप्रचार स्थिरनिधी** या नांवाने तर दुसऱ्या एक लाख रू. दानाची स्थिरनिधी **श्रीमती सुशीलाबाई सदाशिवराव गुट्टे गौरव** श्रद्धानंद गुरूकुल परळी स्थिरनिधी या नावाने (अशा या दोन्हीं स्थिरनिधी) परळी च्या भारतीय स्टेट बँकेत विशेष महत्वपूर्ण अटिने स्थापन केल्या आहेत.

श्रीमती सुशीलाबाई व गुट्टे परिवारांनी या दोन्हीं स्थिरनिधी महानदेशाने प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभेत स्थापन केल्याबद्दल त्यांच्या मनःपूर्वक हार्दिक अभिनंदन व त्यांच्या दीर्घायुरारोग्याबद्दल आर्यजनांकडून मंगल कामना ! स्व. गुट्टे यांना आर्यजनांची भावपूर्ण श्रद्धांजली ! यानिमित्त स्व.सदाशिवराव गुट्टे यांचा जीवन व कार्याचा थोडक्यात परिचय जाणून घेऊया!

श्री सदाशिवराव गुट्टे यांचा जन्म येलदरी (ता.अहमदपूर जि.लातूर) येथे झाला. वडील पाटलोबा व आई केरबाई एक सामान्य कष्टकरी शेतकरी दाम्पत्य ! माता-पित्याच्या शुभसंस्कारामुळे सदाशिव हे लहान वयापासूनच सत्यवादी व मनमिळावू स्वभावाचे होते. त्यांचे प्राथमिक शिक्षण येलदरीत, तर दहावी पर्यंतचे शिक्षण अहमदपूर येथे झाले. शिक्षणानंतर सुरुवातीची ५ वर्षे त्यांनी कवठा येथे 'शिक्षक' म्हणून कार्य केले. पुढे नांदेड येथे शेतकरी खात्यांची ट्रेनिंग

पूर्ण केली व किनगाव (ता.अहमदपूर) येथे कृषी विभागात असिस्टंट व सुपरवायझर पदावर राहुन सेवा बजावली. प्रदीर्घ सेवेनंतर ते २००१ मध्ये सेवानिवृत्त झाले.

पूर्वीपासूनच येलदरी या गावांवर आर्य समाजाचा पगडा होता. पू.श्री.उत्तममुनिजी यांच्यासारखे तत्वनिष्ठ तपस्वी आर्य साधक वेदप्रचारास्तव या भागात येत-जात असत. येलदरी गावच्या नदीकाठचा रम्य व शांत परिसर मुनिर्जींना फारच भावला. त्यामुळे तेथेच ते वानप्रस्थ आश्रम स्थापन करुन मुनिवृत्तीने साधना करु लागले. उत्तम मुनिर्जीमुळे येलदरी, अंधोरी आदी गावात वैदिक विचारांचा प्रसार होण्यास मदत मिळाली. येलदरीतील श्री धारबाजी गुट्टे नावाचे प्रतिष्ठित सद्गृहस्थ ! या पंचक्रोशीत त्यांचा फार मोठा दरारा होता. श्री धारबाजी यांच्यावर ही आर्य विचारांचा चांगलाच प्रभाव पडला व पाहता-पाहता सारे गावच आर्य समाजी झाले. आजही या गावात आर्य सिद्धांतांच्या पाऊलखुणा आढळतात. होळी असो की दिवाळी यज्ञ करुनच येथे सण साजरे होतात. शेजारील अंधोरी हे देखील एक काळचे प्रसिद्ध आर्य समाजी गाव ! येथील स्वातंत्र्यसैनिक मंडळी आर्य समाजी व निष्ठावंत देशभक्त होती. अंधोरीतील पाटील, क्षीरसागर आदी कुटुंबात आज देखील विवाह, नामकरण आदी १६ संस्कार वैदिक पद्धतीनेच होतात. साहजिकच या विशुद्ध वातावरणाचा व वेदविचारांचा प्रभाव जिज्ञासू वृत्तीच्या श्री सदाशिव गुट्टे यांच्यावर पडला. श्री उत्तममुनिर्जींचे शिष्यत्व पत्करुन ते आर्य विचारांचे अनुयायी बनले.

वडिलानंतर घरातील कर्ता पुरुष व त्यातल्या त्यात उच्चशिक्षित असल्याने कुटुंबात, नातेवाईकात व पाहुण्यात श्री गुट्टे यांचा चांगलाच प्रभाव होता. या सर्वांमध्ये त्यांनी एक आर्य समाजी व्यक्ती म्हणून ओळख निर्माण केली. १९६३ साली श्री सदाशिवरावांचा विवाह किनगावच्या मुंडे पाटील घराण्यातील कुलीन कन्या सुशीलाबाईंशी झाला. नावाप्रमाणे सुशील असलेल्या या गृहिणीने आपल्या पतींना मोलाची साथ दिली. या सुयोग्य दाम्पत्यामुळे साऱ्या कुटुंबाला आर्थिक व सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त झाली. संतती लाभली नसली तरी निपुत्रीक असल्याचे दुःख न मानता आपले छोटे भाऊ श्री वसंतराव व भावजय यांनाच आपला मुलगा व सून मानून त्यांना व त्यांच्या कुटुंबाला मातृ-पितृप्रेमाची छाया दिली. पुतण्या चि.ओमप्रकाश यास गुरुकुल शिक्षणासाठी येडसी येथे पाठविण्याचा प्रयत्न केला. तिन्ही पुतण्यांना शिक्षण देऊन सुसंस्कारीत केले. या सर्वांची अगदी

आप्ताप्रमाणे काळजी घेत हित व कल्याण जोपासले. कधीही दुजाभाव केला नाही.

नोकरीकाळात परळीला श्री गुट्टे यांची बदली झाली, तेंव्हा येलदरीहून आपले कुटुंब परळीला आणले. येथे शेती घेतली. नोकरी सोबतच शेतीकडेही ते लक्ष देत. आर्य समाजाच्या कार्यातही भाग घेऊ लागले. एक चांगला मित्रपरिवार जोडला. डॉ.काळे सर (ब्रह्ममुनिजी) सारखे आप्तमित्र भेटले. त्यांच्या प्रेरणेने ते स्वाध्याय, सत्संग, चिंतन, भजनादी कार्यक्रमांमध्ये व्यस्त राहत. परळीच्या गुरुकुल आश्रमातील कार्यक्रमात व आर्य समाजाच्या साप्ताहिक सत्संगात ते हमखास तन्मयतेने भजन गात असत. सभेतर्फे प्रतिवर्षी आयोजित श्रावणी वेदप्रचार कार्यात श्री गुट्टे उत्साहाने सहभागी होत असत. पू.हरिश्चंद्र गुरुजी यांच्या स्थिरनिधी निर्मिती कार्यात लेखनीक म्हणून श्री गुट्टे यांनी जबाबदारी सांभाळली होती. वैदिक सिद्धांतावर त्यांची अपार श्रद्धा होती. वेळोवेळी आर्य समाजाच्या राष्ट्रीय, आंतरराष्ट्रीय सभा व संमेलनात गुट्टे दांपत्य सहभागी होत असत. अजमेर, दिल्ली, मुंबई व राज्यातील आर्य संमेलनांना व इतर जाहीर कार्यक्रमांना ते उपस्थित राहिले.

दुर्दैवाने दीडवर्षांपूर्वी त्यांना कर्करोगाने ग्रासले व सहा ते सात महिन्याच्या आतच दि.७ जून २०१४ राजी त्यांची प्राणज्योत मालवली. त्यांच्या जाण्याने गुट्टे कुटुंबियांचे आधारछत्र लुप्त झाले. पतिदेवांच्या निधनानंतर श्रीमती सुशीलाबाईंनी मोठ्या धैर्याने स्वत:ला सावरले. हिम्मत न सोडता त्या पतीच्या विचारमार्गाने चालण्याचा प्रयत्न करतात. त्यांनी गायिलेल्या भजनांची वही त्यांनी तशीच जपून ठेवली आहे. गृहस्वामीच्या अकाली निधनाचे दु:ख विसरुन त्या वहीतील निवडक भजने गात-गात आध्यात्मिक मार्गाचा अवलंब करीत आहेत. परमेश्वर, श्रीमती गुट्टे काकूंचा ईश्वरीय साधनेचा मार्ग सुकर करो, ही कामना ! दिवंगत श्री सदाशिवराव गुट्टे यांना आर्यजनांची सश्रद्ध आदरांजली ! त्यांच्या स्वर्गस्थ आत्म्यास शांती व सद्गती लाभो, ही कामना !

परळीत चिकित्सा शिबिर

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेतर्फे श्रद्धानंद गुरूकुल आश्रम, परळी-वै. येथे दि. २१ ते २८ फेब्रुवारी २०१६ या कालावधीत प्रान्तीय स्वास्थ्यरक्षा व चिकित्सा शिबिराचे आयोजन करण्यात आले आहे. या साठी रू. ११००/- शुल्क ठेवले आहे. तरी सहभागी व्हावे.

– मंत्री

स्व.सदाशिवराव गुट्टे स्मृति–वैदिक धर्म प्रचार स्थिरनिधीची झेरॉक्स प्रत

यह अपरक्राम्य लिखत नहीं है
This is not a Negotiable Document

भारतीय स्टेट बैंक STATE BANK OF INDIA

PARLI VAIJNATH DIST BEED
MAHARASHTRA INDIA 431515
Tel: 222089

सावधि जमा सूचना
TERM DEPOSIT ADVICE
(सावधि जमा रसीद के एवज में)
(In lieu of Term Deposit Receipt)

MAHARASHTRA ARYA PRATINIDHI SABHA
ARYA SAMAJ
PARLI VAIJNATH
DIST BEED MAHARASHTRA

नामांकन /Nomination : पंजीकृत / Registered / अपंजीकृत / Not Registered
दिनांक / Date : **26/09/2014**

प्रिय महोदय / महोदया, Dear Sir/Madam,

हमें यह पुष्टि करते हुए प्रसन्नता है कि आपकी निम्नलिखित राशि हमारे पास जमा है. भविष्य में, कृपया आपके पत्राचार में खाता क्रमांक का संदर्भ अवश्य दें. हमारे साथ बैंकिंग करने के लिए धन्यवाद. We have pleasure in confirming details of the following amount held in deposit with us. Please quote the account number in all correspondence. Thank you for Banking with us.

नाम /Name: **MAHARASHTRA ARYA PRATINIDHI SABHA .**
सिफ संख्या / CIF No. **80838406478**
पैन संख्या / PAN NO. **AABTM4425A**

a/c Late sadashivrao pattoba gutte yeldarikar Parli v. smarak sthir nidhi vaidik Dharm prachar ke liye.

खाता संचालन की विधि / Mode of Operation :
योजना / Scheme : **TDR-GEN-PUB IND-5Y-10Y-INR**

खाता क्रमांक /A/c No.	सावधि/ Term	ब्याज दर Interest @	मूल राशि Principal Amt.	जारी करने की तारीख Value Date	परिपक्वता की तारीख Maturity Date
34242065615	10 Y	8.5 %	INR 1,00,000.00	26.9.2014	26.9.2024

परिपक्वता राशि / Maturity Value :

INR 1,00,000.00

भवदीय /Yours faithfully,

प्राधिकृत हस्ताक्षरकर्ता /Authorised Signatory

कृपया पृष्ठ पलटें /P.T.O.

Item Code - 2530017

श्रीमती सुशीलादेवी सदाशिवराव गुट्टे गौरव–श्रद्धानन्द गुरूकुल सहायता स्थिर निधीची की झेरॉक्स प्रत

withdrawal – yearly 4w cr 20 one new 11104174 20.

यह अपरक्राम्य लिखत नहीं है
This is not a Negotiable Document

भारतीय स्टेट बैंक STATE BANK OF INDIA

PARLI VAIJNATH DIST:BEED
MAHARASHTRA INDIA 431515
Tel: 222099

सावधि जमा सूचना
TERM DEPOSIT ADVICE
(सावधि जमा रसीद के एवज में)
(In lieu of Term Deposit Receipt)

MAHARASHTRA ARYA PRATINIDHI SABHA
ARYA SAMAJ
PARLI VAIJNATH
DIST BEED MAHARASHTRA

नामांकन /Nomination : पंजीकृत / Registered / अपंजीकृत / Not Registered
दिनांक / Date : **26/09/2014**

प्रिय महोदय / महोदया, Dear Sir/Madam,

हमें यह पुष्टि करते हुए प्रसन्नता है कि आपकी निम्नलिखित राशि हमारे पास जमा है. भविष्य में, कृपया अपने पत्राचार में खाता क्रमांक का संदर्भ अवश्य दें. हमारे साथ बैंकिंग करने के लिए धन्यवाद. We have pleasure in confirming details of the following amount held in deposit with us. Please quote the account number in all correspondence. Thank you for Banking with us.

नाम /Name:	सिफ संख्या / CIF No.	पैन संख्या / PAN NO.
MAHARASHTRA ARYA PRATINIDHI SABHA .	**80936408478**	**AABTM4425A**

a/c Smt. Sushiladevi Sadashivrao Gutte Yeldarkar (Parli) sthir nidhi swami Sardhanand Gurukul Arya Samaj Parli ke liye.

खाता संचालन की विधि / Mode of Operation :
योजना / Scheme : **TDR-GEN-PUB IND-5Y-10Y-INR**

खाता क्रमांक /A/c No.	सावधि/ Term	ब्याज दर Interest @	मूल राशि Principal Amt.	जारी करने की तारीख Value Date	परिपक्वता की तारीख Maturity Date
34242984162	10Y	8.5 %	INR 1,00,000.00	26.9.2014	26.9.2024

परिपक्वता राशि / Maturity Value :

INR 1,00,000.00

भवदीय /Yours faithfully,

प्राधिकृत हस्ताक्षरकर्ता /Authorised Signatory

कृपया पृष्ठ पलटें /P.T.O.

Item Code - 2530017

वार्ता विशेष परळीत दयानंद निर्वाण दिन उत्साहात

अविद्या, अविचार व अविवेकाच्या काळोखात बुडत चाललेल्या समाजाला विशुद्ध वेदज्ञानाचा प्रकाश देऊन त्यांना नवजीवन देणारे महर्षी दयानंद हे खऱ्या अर्थाने ज्ञानाचे सूर्य होते, असे प्रतिपादन वैदिक विचारवंत प्रा.डॉ. नरेंद्र शास्त्री (शिंदे) यांनी केले,

परळी येथील आर्य समाजात विशुद्ध दीपावली पर्व आणि महर्षी दयानंदांचा १३२ वा स्मृतिदिन दि. ११ नोव्हें. २०१५ रोजी साजरा झाला. त्यावेळी डॉ. शास्त्री (शिंदे) हे प्रमुख वक्ते म्हणून बोलत होते. अध्यक्षस्थानी माजी नगराध्यक्ष व संस्थेचे प्रधान श्री जुगलकिशोरजी लोहिया हे होते तर प्रमुख पाहुणे म्हणून सर्वश्री प्रांतीय सभेचे ब्रह्ममुनिजी, मंत्री उग्रसेन राठौर, डॉ. सुरेश चौधरी, गटशिक्षणाधिकारी नाथराव मुंडे, रामकृष्ण लाहोटी आदि उपस्थित होते.

आपल्या अभ्यासपूर्ण भाषणात श्री शास्त्री यांनी दीपावली पर्वाचे आध्यात्मिक महत्व विषद करून स्वामी दयानंदांच्या क्रांतिकारी जीवन व कार्याचा थोडक्यात आढावा घेतला. ते म्हणाले की, आध्यात्मिक दिवे माणसाला खऱ्या अर्थाने आत्मिक आनंद व शाश्वत सुख प्रदान करतात. अशा आत्मज्ञानाचा प्रकाश वेदांच्या माध्यमाने महर्षी दयानंद सरस्वतींनी संपूर्ण जगात निर्माण केला. त्यांच्या प्रयत्नांमुळेच ५ हजार वर्षानंतर सर्वत्र मानव (आर्य) धर्माची स्थापना झाली.

अध्यक्षीस समारोपात श्री जुगलकिशोर लोहिया यांनी महर्षी दयानंदांचे जीवन व कार्य हे समाजाच्या नवनिर्मितीसाठी पोषक असल्याचे सांगितले. या प्रसंगी डॉ. ब्रह्ममुनिजी व डॉ. सुरेश चौधरी यांनीही विचार मांडले. प्रारंभी पं. प्रशांतकुमार शास्त्री यांच्या पौरोहित्याखाली दीपावली विशेष यज्ञ संपन्न झाला. कु. रोहिणी व चि. सोमेश्वर आघाव या भावडांनी भक्तीगीत सादर केली. कार्यक्रमाचे प्रास्ताविक श्री लक्ष्मणराव आर्य व सूत्रसंचलन दयानंद भारती यांनी केले. तर आभार जयपाल लाहोटी यांनी मानले

आघाव दांपत्याचा सत्कार –

सारडगांव येथील आर्य समाजाचे मंत्री श्री भागवतराव आघाव हे नुकतेच आपल्या अध्यापन सेवेतून निवृत्त झाले. याबद्दल वरील कार्यक्रमात आर्य समाज परळीच्या वतीने प्रधान श्री जुगलकिशोरजी लोहिया यांच्या हस्ते श्री भागवतराव आघाव यांचा सपत्नीक सत्कार करण्यात आला इतर मान्यवरांनीही यावेळी श्री आघाव यांचा सत्कार केला. सत्कारानंतर मनोगत व्यक्त करतांना आघाव गुरूजींनी आर्य समाजामुळे आपल्या जीवनाला नवी दिशा मिळाल्याचे

सांगितले. श्री लक्ष्मण गुरूजी व डॉ. ब्रह्ममुनिजी यांच्याकडून वैदिक विचारांकडे वळण्याची प्रेरणा मिळाली, असे ते म्हणाले. आपले उर्वरित आयुष्य सामाजिक कार्यासाठी घालवू असे आश्वासन श्री आघाव यांनी दिले.

आर्य समाज गुंजोटी जीर्णोद्धार ऋणनिर्देश प्रकाशन

हैद्राबाद स्वातंत्र्य संग्रामाची अग्निशिखा म्हणून ओळख असलेले अमर हुतात्मे आर्यवीर वेदप्रकाश यांच्या बलिदानाची आठवण ठेवून नव्या पीढीने व आर्य कार्यकर्त्यांनी वेदाधारित आदर्श मानवसमाजाची व राष्ट्राची नवनिर्मिती करण्यासाठी कृतसंकल्प व्हावे, असे आवाहन महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेचे संरक्षक स्वामी श्रद्धानंदजी यांनी केले.

गुंजोटी ता.उमरगा येथील आर्य समाजात आयोजित हुतात्मा वेदप्रकाश बलिदान समारंभात व जीर्णोद्धारीत आर्य समाज गुंजोटी च्या दानदात्यांच्या ऋणनिर्देश पुस्तिका प्रकाशन सोहळ्यात श्री स्वामीजी अध्यक्षस्थानावरुन बोलत होते. प्रमुख पाहुणे म्हणून सभेचे प्रधान डॉ.ब्रह्ममुनिजी, मंत्री माधवराव देशपांडे, उपप्रधान राजेंद्र दिवे, उपमंत्री प्रा.देवदत्त तुंगार आदी उपस्थित होते.

याप्रसंगी स्वामीजी म्हणाले- हैद्राबादच्या स्वातंत्र्य संग्रामाची सुरुवात हुतात्मा वेदप्रकाशजींच्या पावन बलिदानाने झाली. तत्कालीन परिस्थितीत हे बलिदान मातृभूमीच्या रक्षणासाठी ते आर्यवीरांना दीपस्तंभ ठरले. सध्याच्या वर्तमान परिस्थितीत आर्यसमाजाच्या विचारांची गरज मोठ्या प्रमाणात वाढली आहे. हे लक्षात घेऊन वैदिक धर्माचे मानवतावादी व विश्वकल्याणकारी विचार जगासमोर आणण्याकरिता प्रयत्न करणे, हे आपल्या समोरचे सर्वात मोठे आव्हान आहे. हे आव्हान पेलण्याचे सामर्थ्य आर्यवीरांमध्ये यावे. याप्रसंगी डॉ.ब्रह्ममुनिजी यांनी आर्य समाज गुंजोटीच्या जीर्णोद्धार कार्यात अनेक दानदात्यांनी उदार अंत:करणाने आर्थिक मदत करुन हे ईश्वरीय कार्य संपन्न केल्याबद्दल ऋण व्यक्त केले. ते म्हणाले- या वास्तुचे संवर्धन व संरक्षण करीत या संस्थेला वेदप्रचाराचे केंद्र बनवावे. गुंजोटी, उमरगा व तसेच महाराष्ट्रातील अनेक ठिकाणच्या दानशूरांनी या कार्यात तसेच गुंजोटी गावातील अगदी सामान्य कुटुंबातील महिला व पुरुषांनी देखील हातभार लावला. हे दातृत्व निश्चितच भविष्यात आर्य समाजाच्या प्रचार कार्यात मोठे योगदान देईल. सामान्यपणे ५० रु.चे पवित्र दान करुन गावातील कष्टकरी शेतकरी व मजूर महिलांनी या यज्ञात आहुती दिली, हे

अनुकरणीय कार्य इतरांसाठी प्रेरणादायी ठरो, असेही श्री मुनिजी म्हणाले.

आर्यसमाज गुंजोटीचे प्रधान दिनकरराव देशपांडे यांच्यासह सर्वश्री वैदिक विद्वान पं.प्रियदत्तजी शास्त्री, सभेचे मंत्री माधवराव देशपांडे, कोषाध्यक्ष उग्रसेन राठौर, उपप्रधान राजेंद्र दिवे, मंत्री काशीनाथराव कदेरे, उपमंत्री महाळप्पा दुधभाते आदींनीही विचार मांडले. व्यासपीठावर सर्वश्री प्रा.ओमप्रकाश होळीकर, लक्ष्मणराव आर्य, प्राचार्य देवदत्त तुंगार, पं.राजवीर शास्त्री, शंकरराव बिराजदार, बब्रुवान शिंदे, सुरेश चिंतावार, विज्ञानमुनिजी, आर्यमुनिजी, रंगनाथ तिवार आदी उपस्थित होते. याच कार्यक्रमात स्वामी श्रद्धानंदजींच्या शुभहस्ते ऋणनिर्देश पुस्तिकेचे प्रकाशन करण्यात आले. त्यानंतरही ही ऋणनिर्देश पुस्तिका दानदात्यांना वितरीत करण्यात आली. सूत्रसंचलन पं.राजवीर शास्त्री यांनी केले, तर आभार श्री दुधभाते यांनी मानले.

दोडिया कुटुंबाने स्वखर्चाने बांधली यज्ञशाळा

जीवंत आई-वडिलांची सेवा हेच खरे श्राद्ध व तर्पण - श्रद्धानंदजी

मानवी जीवनात खरे स्वर्गीय सुख मिळवावयाचे असेल तर जीवंत आई-वडिलांची मनोभावे सेवा व शुश्रूषा करणे हाच खरा धर्म आहे. कारण जीवंतपणी केलेली मातृ-पितृसेवा हेच खरे श्राद्ध व तर्पण ठरते, असे प्रतिपादन थोर संन्यासी स्वामी श्रद्धानंद सरस्वती यांनी केले.

परळी येथील दानशूर सामाजिक कार्यकर्ते श्री जयकिशोर दोडिया व कुटुंबाच्या वतीने आपले वडील श्री हरिप्रसादजी व मातु:श्री सौ. रुक्मिणीदेवी दोडिया यांचा अमृत महोत्सव काल (दि.८) विविध सामाजिक उपक्रमांनी साजरा करण्यात आला. आई-वडिलांच्या गौरवार्थ येथील आर्य समाजात ३ लाख रुपयांच्या दाननिधीद्वारे बांधण्यात आलेल्या नूतन 'महर्षी दयानंद यज्ञशाळे'चे उद्घाटन यावेळी मान्यवरांच्या हस्ते करण्यात आले. कार्यक्रमाच्या अध्यक्षस्थानी माजी नगराध्यक्ष व आर्य समाजाचे प्रधान श्री जुगलकिशोर लोहिया हे होते, तर प्रमुख पाहुणे म्हणून पू.स्वामी श्रद्धानंद सरस्वती, मसापच्या परळी शाखेचे अध्यक्ष श्री चंदुलाल बियाणी, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेचे प्रधान डॉ.ब्रह्ममुनिजी व मंत्री माधवराव देशपांडे हे उपस्थित होते. यावेळी मान्यवरांनी दोडिया परिवाराच्या या परोपकारी, सामाजिक आणि धार्मिक अशा स्तुत्य उपक्रमाबद्दल गौरवोद्गार काढले.

अध्यक्षीय समारोपात श्री जुगलकिशोर लोहिया यांनी 'आजकालच्या बदलत्या वातावरणात आई-वडिलांच्या सेवेचे पुण्यप्रद असे मोलाचे कार्य श्री व

सौ. दोडिया यांनी केल्याबद्दल समाज त्यांचा ऋणी राहिल', असे प्रतिपादन केले. याप्रसंगी सर्वश्री पर्यावरण यज्ञविशेषज्ञ डॉ.प्रद्युम्नकुमार शास्त्री(राँची-झारखंड), पं.संदीप वैदिक(मुजफ्फरनगर), पं.राजवीर शास्त्री, डॉ.ब्रह्ममुनी, श्री देशपांडे, ॲड.डॉ.वर्षा गोपाल दोडिया, सौ.शिल्पा शैलेश दोडिया, सौ.सरोज जयकिशोर दोडिया आदींनी विचार मांडले. अमृत महोत्सवानिमित्त उपस्थित सर्व मान्यवरांनी श्री हरिप्रसादजी व सौ.रुक्मीणीबाई दोडिया यांचा हृद्य सत्कार केला व दीर्घायुष्य चिंतीले. कार्यक्रम यशस्वी करण्यासाठी सर्वश्री रंगनाथ तिवार, लक्ष्मणराव आर्य गुरुजी, डॉ.वीरेंद्र शास्त्री, प्रभुलाल गोहिल, रामेश्वर दोडिया, ॲड.गोपाल दोडिया, शैलेश, निलेश व कुटुंबातील सर्वांनी प्रयत्न केले.

मानवतेची प्रार्थना

तुझा सूर्य उगवे, आम्ही प्रकाशात न्हातो,
तुझे गीत गातो देवा, तुझे गीत गातो !

झऱ्यातुनी निर्मळ वाहे तुझा निळा छंद,
फुलांतुनी लहरत राहे तुझा हा सुगंध,
तुझ्या प्रेरणेने पक्षी उंच-उंच जातो,
तुझे गीत गातो देवा, तुझे गीत गातो !

मुशाफिरा थकल्या देतो वृक्ष गाढ छाया,
तशी तुझी आम्हांवरती माऊलीची माया !
जिथे-तिथे जातो तेथे तुझा हात येतो,
तुझे गीत गातो देवा, तुझे गीत गातो !

मंदिरात माणुसकीच्या तुझा नित्य वास,
सत्य, प्रेम, करूणा आहे तिथे तुझा श्वास,
विकासात अमुच्या आम्ही तुझी भेट घेतो,
तुझे गीत गातो देवा, तुझे गीत गातो !

तुझीं मुले आम्ही सगळी, नसे जातपात,
द्वेष, भेद यांच्या भिंती नको या जगात !
सुरांतुनी वाहुनि आम्ही तुझे प्रेम नेतो,
तुझे गीत गातो देवा, तुझे गीत गातो !

कवी - स्व.मंगेश पाडगांवकर
(नवा दिवस या काव्यसंग्राहातून)

॥ कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ॥

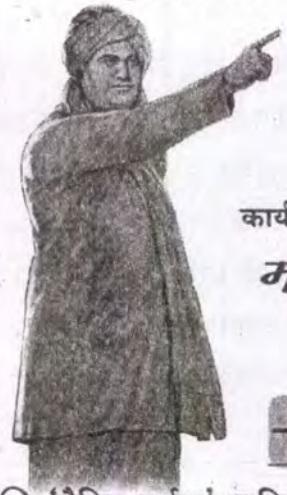

वेदों की ओर लौटो !

वेद प्रतिपादित मानवीय
जीवन मूल्यों को
जन–जन तक पहुँचाने हेतु
कार्यतत्पर सशक्त एवं समर्थ प्रान्तीय आर्य संगठन

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा

(पंजीयन-एच. 333/र.नं.ह/टी.इ. (७)१६७/१०४९,
स्थापना ५ मार्च १९७७)

– मानवकल्याणकारी उपक्रम –

- 'वैदिक गर्जना' मासिक मुखपत्र
- आर्य समाज दिनदर्शिका
- पू. हरिश्चन्द्र गुरूजी गौरव–'मानवता संस्कार एवं आर्यवीरदल शिविर'
- आर्य कन्या वैदिक संस्कार शिविर
- पातञ्जल ध्यानयोग शिविर
- प्रान्तीय आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर
- पुरोहित प्रशिक्षण शिविर
- मानव जीवनकल्याण वेद प्रचार (श्रावणी) उपाकर्म अभियान
- स्व. विठ्ठलराव बिराजदार स्मृति विद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- सौ. तारादेवी जयनारायणजी मुंदडा विद्यालयीन राज्य.निबंध स्पर्धा
- सौ. कलावतीबाई व श्री मन्मथअप्पा चिल्ले (आनन्दमुनि) महाविद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- विद्यार्थी सहायता योजना
- सौ.डॉ. विमलादेवी व श्री डॉ.सु.ब.काले (ब्रह्ममुनि) महाविद्यालयीन राज्य. निबन्ध स्पर्धा
- स्व.पं. रामस्वरूप लोखण्डे स्मृति संस्कृत राज्य प्रतियोगिताएं
- मानवजीवन निर्माण अभियान – विद्यालय व महाविद्यालयों के लिए (वैदिक व्याख्यानमाला)
- शान्तिदेवी मायर स्मृति मानवनिर्माण एवं सेवा योजना
- स्व. भसीन स्मृति एवं मायर गौरव स्वास्थ्य रक्षा एवं चिकित्सा शिविर
- शान्तिदेवी नायर विधवा सहायता योजना
- वैदिक साहित्य भेट योजना
- पंथ–जातिप्रथा निर्मूलन अभियान
- वैदिक साहित्य प्रकाशन योजना
- आपत्कालीन सहायता योजना
- पर्जन्यवृष्टि यज्ञ अभियान
- गौ–कृषि सेवा योजना
- स्वा.सै.श्री गुलाबचंदजी लदनिया गौरव राज्य योगासन प्रतियोगिता
- सौ.धापादेवी गु. लदनिया गौरव राज्य प्राणायाम प्रतियोगिता

श्रीमती मायर विधवा महिला सहाय्यता –आवेदन सूचना

पूज्या स्व. श्रीमती शान्तिदेवी मायर (मिडैक्स–लन्दन) द्वारा विधवा महिलाओं के उत्थान के लिए सभा में **श्रीमती शान्तिदेवी विधवा महिला सहाय्यता स्थिरनिधि** स्थापित की थी । जिसके ब्याज से विधवा महिलाओं को आर्थिक सहाय्यता मिलती रहें । शर्त है की वह महिला भूमिहीन, नौकरी न करनेवाली, पुनर्विवाह न करनेवाली, पेन्शन न पानेवाली, अपनी मकान का किराया प्राप्त न करनेवाली हो । साथ ही वह अत्यन्त गरीब व मजदूरी करके आजीविका चलानेवाली तथा बच्चोंवाली हो, उसे किसी जाति, पन्थ या मजहब का बन्धन नहीं है ।अतः ऐसी इच्छुक महिलाये सहाय्यता हेतु अपने आवेदन पत्र सभा कार्यालय के पते पर भेंजें । – **सभामंत्री**

विद्यार्थी सहाय्यता निधि – आवेदन पत्र हेतु सूचना

डॉ. तानाजी आचार्य (लंदन) की प्रेरणा से महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा में असहाय्य छात्रों के लिए मानवदत्तक योजना कार्यान्वित है । इसके अनुसार समाज के गरीब परिवारों में अध्ययन करनेवाले छात्रों के लिए आर्थिक सहाय्यता की जाती है । अतः जो बुद्धिमान छात्र धन के अभाव में पढ नही पाते । ऐसे छात्रों एवं उनके अभिभावकों से निवेदन है कि वे स्वानीय आर्य समाजों द्वारा सभा को आवेदन पत्र भेजें और इस सहाय्यता निधी लाभ उठावें । – **सभामन्त्री**

योग साधना व जीवन निर्माण का उत्तम केंद्र

आर्य वानप्रस्थ आश्रम, परली वैजनाथ

आयु के ५०–६० वर्ष बिता चुके तथा गृहस्थाश्रम की जिम्मेदारियों मुक्त, अपनी शासकीय व अशासकीय नोकरियों से सेवानिवृत्त हो चुके तथा सांसारिक मोहबन्धनों से ऊब चुके सज्जन महानुभावों, दम्पतियों के लिए स्वास्थ्य रक्षा, सेवा, स्वाध्याय, आध्यात्मिक साधना हेतु **आर्य वानप्रस्थ आश्रम, परली वैजनाथ जि बीड– (महा.)** में पूरी व्यवस्था है । वे यहां पर आकर ठहर सकते हैं । साथ ही अपनी सेवाओं में कार्यरत व्यक्ति, व्यापारी लोग भी वर्ष में एक या दो बार आकर दस – पन्द्रह दिनों तक रह सकते हैं । यहां पर प्राकृतिक व आयुर्वेदक चिकित्सा, ध्यान धारणा केंद्र, वैदिक ग्रन्थालय, वैदिक अनुसन्धान केंद्र, आदि द्वारा स्वास्थ रक्षा, योग–साधना, स्वाध्याय–चिंतन, लेखन का लाभ उठा सकते हैं । सभी सज्जनों का स्वागत हैं ! – **व्यवस्थापक**

सम्मान व अभिनन्दन

आर्य समाज घाटकोपर (मुम्बई) के वार्षिकोत्सव में व्याख्यात्री श्रीमती नलिनी माधव देशपाण्डे का सम्मान करते हुए वैदिक विद्वान् डॉ.सुरेन्द्रकुमारजी ।

आर्य समाज परली में आयोजित ऋषिनिर्वाणोत्सव के मुख्य वक्ता प्रा.डॉ.नरेन्द्रजी शास्त्री का सम्मान करते हुए प्रधान श्री जुगलकिशोरजी लोहिया ।

निवृत्त अध्यापक श्री भागतवरावजी आघाव का सपत्नीक अभिनन्दन करते हुए प्रधान श्री जुगलकिशोरजी लोहिया एवं डॉ. नरेन्द्रजी शास्त्री ।

परिवारों के प्रति सच्ची निष्ठा, सेहत के प्रति जागरुकता, शुध्दता एवं गुणवत्ता, करोंडों परिवारों का विश्वास, यह है एम.डी.एच.का इतिहास जो पिछले ९० वर्षों से हर कसौटी पर खरे उतरे हैं -जिनका कोई विकल्प नहीं। जी हां यही हैं आपकी सेहत के रखवाले -

लाजवाब खाना !
एम.डी.एच. मसाले
हैं ना !

MDH
मसाले
असली मसाले
सच-सच

आर्य जगत् के दानवीर भामाशाह
महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त
महाशय धर्मपालजी

ESTD 1919

MAHASHIAN DI HATTI LTD.
Regd. Office : MDH House,
9/44 Kirti Nagar, New Delhi-110015.
Ph. : 25939609, 25937987
Fax : 011-25927710
E-mail : mdhltd@vsnl.net
Website : www.mdhspices.com

REG.No. MAHBIL/2007/7493 *Postal No. L/Beed/18/2015

सेवा मे
श्री

प्रेषक -
मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
आर्य समाज, परली वैजनाथ.
पिन ४३१ ५१५ जि.बीड. (महाराष्ट्र)

यह मासिक पत्र सम्पादक व प्रकाशक श्री मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा वैदिक प्रिंटर्स, परली वैजना
स्थलपर मुद्रित कर 'महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा' कार्यालय 'आर्य समाज, परली वैजनाथ ४३१ ५१५ जि.बीड (मह
इस स्थान से प्रकाशित किया।

जीवेत शरदः शतम् ।

परोपकार, समाजसेवा, वेदप्रचार, शिक्षाप्रसार तथा नागपुर शहर व विदर्भ, म
आर्य समाज की गतिविधियों को बढाने में कार्यतत्पर आदर्श आर्य द
श्री.पं.सुरेन्द्रपालजी आर्य
(प्रसिध्द भजनोपदेशक व गीतकार, नागपुर)
सौ.करुणादेवी आर्या
(अवकाशप्राप्त मुख्याध्यापिका, मन्त्राणी, महिला आर्य समाज, जरीपटका, नागपुर)
के गौरव में 'वैदिक गर्जना' मासिक का रंगीन मुखपृष्ठ सस्नेह